ऋषभ विहार दिल्ली में चातुर्मास कर रहे परम पूज्य आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् वंदन

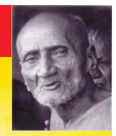

आचार्य श्री शांति सागर जी

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 29 अंक 40 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 31 जुलाई 2023, वीर नि. संवत् 2549

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

राजस्थान में राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड की अधिसूचना जारी, जैन समाज में हर्ष

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का जैन समाज ने जताया आभार

राजस्थान में राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड की अधिसूचना जारी, जैन समाज में हर्ष मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का जैन समाज ने जताया आभार

- डॉ. सुनील जैन 'संचय'

राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड के गठन की अधिसूचना जारी करते हुए लिखा है कि - राज्य सरकार द्वारा जैन समुदाय के मंदिर, पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षण एवं नव निर्माण, जैन समुदाय के लोक साहित्य एवं ग्रंथों के प्रकाशन, प्रचार- प्रसार, इनके प्राचीन साहित्यों के संकलन, शोध एवं सरंक्षण तथा जैन धर्म श्रमण परम्पराओं के संरक्षण के सम्बन्ध में सुझाव देने हेतु राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड का गठन किया जाता है। इसके सात बिन्दुओं में उद्देश्य इस प्रकार हैं

1. जैन धर्म श्रमण परम्पराओं के संबंध में राज्य सरकार को सुझाव देना।
2. जैन समुदाय के लोगों के कल्याण हेतु इस समाज के लिये विभिन्न योजनाएं प्रस्तावित करने एवं उनके प्रचार प्रसार के संबंध में राज्य सरकार को सुझाव देना।
3. जैन समुदाय पर आधारित पुरातात्विक धरोहरों एवं मंदिरों का संरक्षण एवं नव निर्माण के संबंध में राज्य सरकार को सुझाव देना।

शेष पेज 10 पर........

Vayudoot Group

Vayudoot WORLD TRAVELS INDIA PVT. LTD

Vayudoot DESTINATION WEDDINGS & EVENTS

Vayudoot GROCERIES

Vayudoot CATERERS

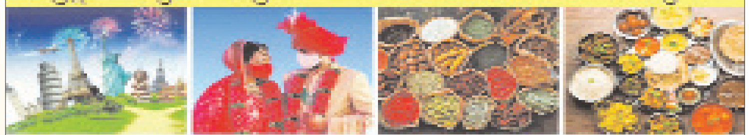

WORLD TRAVELS DESTINATION WEDDINGS GROCERIES CATERING

+91 9313338256, 9810408256, 9818312056

R. K. Advertising

हेड ऑफिसः कोलकाता, गुवाहाटी, ब्रांच ऑफिस जयपुर, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.) मे आपका स्वागत है।

जैन गजट में सम्पूर्ण भारत के विज्ञापन हेतु अधिकृत

1- समाचार प्रकाशित करवाने के लिए- ज्ञात रहे कि समाचार निःशुल्क प्रकाशित होते हैं।

2- जैन गजट की सदस्यता प्राप्त करने के लिए- जैन गजट साप्ताहिक को जैन समाज के प्रत्येक घर में मंगाना चाहिए। जैन गजट एक ऐसा समाचार पत्र है जो समस्त साधुओं के होने वाले चातुर्मास, दीक्षा जयंती, जन्म जयन्ती, धार्मिक व सामाजिक महोत्सव, वेदी प्रतिष्ठा, पंचकल्याणक, विधान आदि की जानकारी देकर भक्तों को लाभान्वित करता है।
मात्र 2100/- रूपये के रजिस्ट्रेशन में 10 वर्ष तक हर सातवें दिन घर बैठे प्राप्त कीजिये।

3- जैन गजट में विज्ञापन प्रकाशित करवाने के लिये - धार्मिक, व्यापारिक, सामाजिक, बधाई संदेश, शुभकामना संदेश, पुण्य-तिथि आदि सभी प्रकार के विज्ञापनो के लिए सम्पर्क कीजिये -
शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता- जैन गजट, मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर- मोबा. 8003892803

email : rkpatni777@gmail.com

मदनगंज किशनगढ़ से किसी भी तरह का मार्बल एवं ग्रेनाइट उचित रेट पर सही माल खरीदने के लिये मात्र 5 प्रतिशत कमीशन पर सम्पर्क कीजिये

हेड ऑफिस :- कोलकाता, गुवाहाटी, ब्रांच ऑफिस जयपुर, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.) मे आपका स्वागत है।

मार्बल खरीदने में निम्न समस्याएं आती हैं -

1. खरीददारों को मार्बल की सही जानकारी नहीं होना।
2. नाप - चौक का पूरा ज्ञान न होना।
3. पूरी कीमत अदा करने पर भी कीमत के अनुरूप माल न मिलना।
4. मार्बल की सही जानकारी न होने के कारण मार्बल फिटर द्वारा 10 से 30 प्रतिशत क्रेता का शोषण होना।
5. विश्वनीय मार्बल विक्रेताओं की जानकारी न होने के कारण अविश्वसनीय विक्रेता के हत्थे चढ़ जाना।

संपर्क सूत्रः शेखरचंद पाटनी - 9667168267, रोहित कुमार पाटनी - 8003892803

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

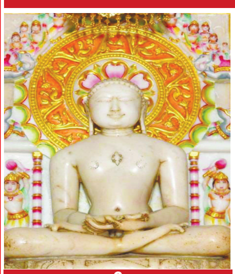

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE

आरती : 7:15 - 7:45 AM

शांतिधारा : 8:30 AM

@jainmandirhasteda

नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:

अमित शर्मा (Manager)-9783016885

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.

संपर्क सूत्रः

नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955

मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

JK MASALE SINCE 1957

Buy online on jkcart.com

— Breakfast Matlab —

JK POHA

Shudh Khao Swasth Raho...

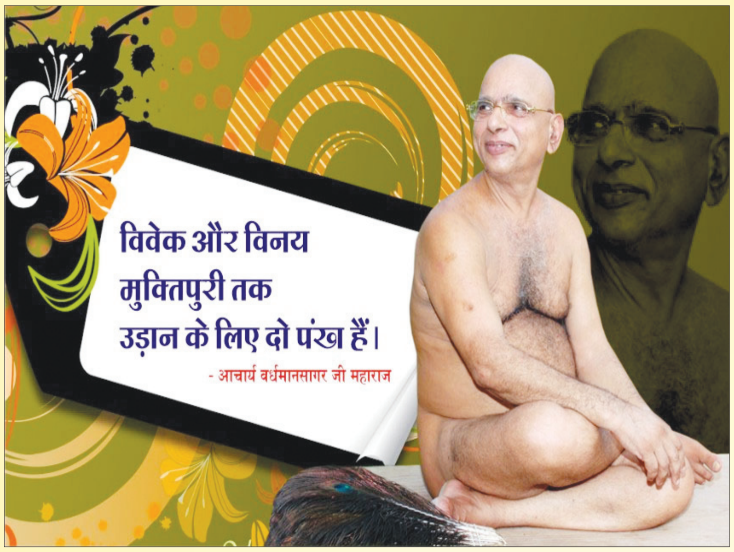

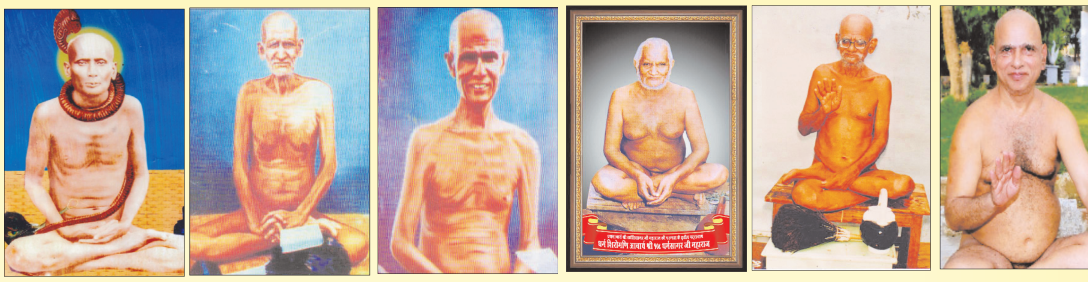

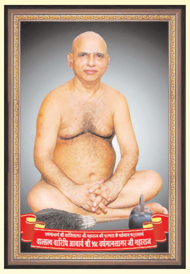

वर्धमान सूत्र

वात्सल्य वारिधि, जिनधर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज

आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज उदयपुर में ससंघ विराजमान हैं। आचार्य श्री ससंघ के चरणों में शत् शत् वंदन, शत् शत् नमन्

नमनकर्ता

वीरेन्द्र हेगड़े धर्मस्थल | सरिता जैन चेन्नई | सौभाग्यमल कटारिया अहमदाबाद | राजेन्द्र कटारिया अहमदाबाद | रत्नप्रभा सेठी गुवाहाटी | ज्ञानचन्द पाटनी दुर्ग | रमेश काला हैदराबाद | प्रकाश चन्द्र-सरला देवी पाटनी शिलोंग | श्रीमती सुधा सोनी अजमेर

जयपुर के नमनकर्ता

नरेन्द्र कुमार पाटनी निखार | नवरतन मल पाटनी अष्टम प्रतिमाधारी | दिनेश चंद्र कासलीवाल, (जयपुर के प्रमुख समाजसेवी लाल हवेली वाले) | श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत (हुलासचन्द सबलावत परिवार) | विवेक काला - श्रीमती आशा काला | श्रीपाल चूड़ीवाल - श्रीमती कुसुम चूड़ीवाल | इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल (धर्मपत्नी स्व. आनन्दीलाल जी चूड़ीवाल) निखार फैशन्स, जयपुर

कोलकाता के नमनकर्त्ता

धर्मचन्द मोदी | पवन मोदी | महावीर प्रसाद | सूमेरमल - श्रीमती नर्मदा चूड़ीवाल

श्रीमती सुलोचना सेठी | अजित कुमार-श्रीमती विमला देवी पाड्ण्या | विजय कुमार पाटनी (सी.ए.) | केवलचन्द पाटनी

मदनलाल बज | राजेश कुमार छाबड़ा | चान्दमल - शान्तिदेवी सरावगी | विनोद कुमार कासलीवाल

डीमापुर के नमनकर्ता

श्रीमती फूली देवी कासलीवाल | दुलीचन्द विनायक्या | अनिल टोंग्या | निर्मल झांझरी | अजीत पाटनी (सीए)

शिखरचन्द बाकलीवाल | श्रीमती फूला देवी गंगवाल | पन्नालाल सेठी | प्रदीप कुमार | श्रीमती सरोज झांझरी

अशोक कुमार | किरण छाबड़ा | सुरेश कुमार छाबड़ा | डॉ. सुनिल कुमार-श्रीमती अनीता सेठी

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

SANTOSH JAIN & ASSOCIATEL
SWATI VINIMAY & CONSULTAN PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTER,
PNB Building, 4th Floor, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 99574-97927

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

जिस प्रकार आत्म कल्याण के लिए भीतर डूबना जरूरी है, उसी प्रकार प्रभावना और जिनधर्म की सुरक्षा के लिए बाहर झूझना होगा, आँख बंद करके सोने का नाटक करने वाले को हम जगा नहीं सकते, स्वयं सक्रियता से काम करना होगा

जन-जन के आराध्य, उपसर्ग विजेता, परम पूज्य चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य श्री सुनील सागर जी

स्वराज जैन

पूज्य 108 आचार्य श्री सुनीलसागरजी गुरुदेव ऋषभ विहार, दिल्ली NRC में अपने मधुर वचनों से प्रतिदिन धर्म की गंगा बहा रहे है। दिनांक 27 जुलाई 2023 को पूज्य गुरुदेव ने अपने उद्बोधन में कहा कि -

सत्य को कहने के लिए
किसी शपथ की जरूरत नहीं,
नदियों को बहने के लिए
किसी पथ की जरूरत नहीं,
जो बढ़ते हैं अपने मजबूत इरादों पर,
उन्हें किसी रथ की जरूरत नहीं होती।

किसी भी मार्ग पर बढ़ना हो या मोक्षमार्ग में बढ़ना है तो मजबूत इरादों की जरूरत होती है। भगवान महावीर स्वामी का 2550 वाँ निर्वाण महा महोत्सव हमारे सम्मुख है, उसके प्रभावना के लिए हमारे इरादे मजबूत होने चाहिए, अगर हमारे इरादे मजबूत नहीं तो उपलब्धि भी मजबूत नहीं होती। जब दुनिया में भयंकर मिथ्यात्व और जानवरों की हिंसा आदि का

माहौल फैला हुआ था, ऐसे खतरनाक माहौल में भी महावीर स्वामी ने अहिंसा की गूंज उठाई जो आज 2550 वर्ष बाद भी गुंजायमान है। उनके इरादे मजबूत थे, मोक्षमार्ग पर बड़े और तपस्या करके सिद्ध बनकर सिद्धशिला पर विराजमान हो गये। जिनधर्म की प्रभावना प्रायोगिक होकर करनी चाहिए। जिस प्रकार आत्म कल्याण के लिए भीतर डूबना जरूरी है उसी प्रकार प्रभावना और जिनधर्म की सुरक्षा के लिए बाहर झुकना होगा। आँख बंद करके सोने का नाटक करने वाले को हम जगा नहीं सकते, स्वयं सक्रियता से काम करना होगा। देश के लिए तो कर्तव्य करते ही हैं और आगे भी करते रहेंगे पर जिनधर्म के लिए योग्य अधिकार मिलने चाहिए। जैन साधु संतों के साथ विहार में प्रशासन होना चाहिए। भक्ति और श्रद्धा का सम्मान होना चाहिए, इसलिए कुछ उपक्रम करना चाहिए। समाज का नेतृत्व करते हुये, धर्म की रक्षा करनी चाहिए। आध्यात्मिकता के साथ साथ व्यवहारिकता भी जरूरी है। अंतर्मुखता के साथ साथ बहिर्मुखता भी जरूरी है।

गुरुओं की पवित्र वाणी जीवन में औषधि के समान

स्वराज जैन

बड़ौत नगर के ऋषभ सभागार में गत दिनों परम पूज्य आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज ने धर्म सभा में प्रवचन करते हुए कहा कि कुलहीन कभी अच्छे विचारों पर विचार नहीं करता है। वह हमेशा कलह, कषाय, अशांति और विद्रोह के विचार करता है। कषाय भाव जीवन को कलंकित करता है। विशुद्ध सागर जी महाराज ने कहा कि विचार शीलता, विनय, मधुर भाषण कुलीन पुरुषों की पहचान होती है। सज्जन पुरुष कुलहीन वाचाल पुरुषों से ऐसे ही डरते हैं। विपत्ति के समय भी सज्जन अपनी सज्जनता नहीं

ऋषभदेव सभागार में प्रवचन देते जैन संत, परम पूज्य शिरोमणि आचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी महाराज

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी

छोड़ते हैं। क्रोधी, कुलहीन मनुष्यों से कलह की अपेक्षा मौन ही श्रेष्ठ है। उन्होंने कहा कि दान और धर्म उत्साहपूर्वक करना चाहिए। प्रसन्नचित्त पूर्वक किया सुकार्य सिद्धि और प्रसिद्धि का कारण है। दान और पूजा स्वयं करो। भृत्यों से कराया दान आत्म विशुद्धि का कारण नहीं है। दान वही श्रेष्ठ है जो स्व पर कल्याण के उद्देश्य से भरा हो। परस्पर में उपकार करना ही जीव का कर्तव्य है। गुरुओं की पवित्र वाणी हमारे जीवन में औषधि के समान उपकारी है। प्रत्येक मानव को स्व-क्षयोपशम अनुसार गुरुओं के प्रवचनों को सुनकर आत्म कल्याण करना चाहिए।

जैन राजनैतिक चेतना मंच म. प्र. का राष्ट्रीय स्तर का अधिवेशन 6 अगस्त को इंदौर में

जैन राजनैतिक चेतना मंच मध्य प्रदेश का राष्ट्रीय स्तर का अधिवेशन रविवार 6 अगस्त को इंदौर में प्रातः 10 बजे से दो सत्रों में रवींद्र नाट्य ग्रह, आर एन टी मार्ग, इंदौर पर आयोजित किया जा रहा है, जिसमें समस्त जैन समाज के लगभग 1500 लोगों के शामिल होने की संभावना है। अधिवेशन में देश के समस्त जैन राजनीतिज्ञों को आमंत्रित किया गया है। अधिवेशन में जैन समाज को देश की राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से प्रवेश करने के विषय पर विचार विमर्श एवं चिंतन होगा। विस्तृत कार्यक्रम शीघ्र ही घोषित किया जाएगा। कृपया अवश्य पधारें। भवदीय - सुभाष जैन काला - भोपाल (प्रदेश अध्यक्ष) मो. 9425006894। आपके पधारने/आने की सूचना निम्न व्हाट्सएप नंबरों में से किसी एक पर आवश्यक रूप से देने की कृपा करें जिससे आपके निवास व भोजन आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

प्रेमचंद काला-9425058431, मुकेश उड़ान-9827276530, ओ. पी. सिंघई-9301517964, अमिताभ मनया-9425000889, राजीव जैन गिरधरवाल-8871713822

उदयपुर (राज.) में ससंघ विराजमान

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

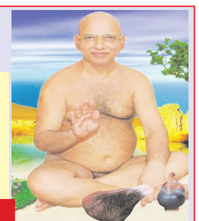

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन/भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार
'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009 Cell : 919435111035
Jain Group

निर्मल - पुष्पा बिन्दायका
बगरू निवासी कोलकाता प्रवासी

EVER GREEN be positive get positive

Evergreen Hosiery Industries Pvt. Ltd.

Corp. Regd. Office : 39, Tara Chand Dutta Street, 2nd Floor
Opp. : Moonlight Cinema, Kolkata - 700 073 (W.B.)
Mobile : 033 4001 0686, 91633 91228, 80131 20773
Email : evergreenhosieryindustries@yahoo.com
Website : www.evergreenhosieryindustries.com

Hello Bebe LITTLE POPS KIDS WEAR

Young India Fashions
Corp. Off. : 39, Tara Chand Dutta Street, 2nd Floor, Opp. : Moonlight Cinema Kolkata - 700 073 (W.B.) Mob. : 98300 05085, 98302 75490
Factory : Regent Garments & Apparel Park, Block - 23, 5th Floor, Jessore Road Near Fortune Township, Dist. - 24 Parganas (N) - 743294, Mob. : 98311 31838

MAHAVEER SAREE
Address : 446, Abhishek Market, Ring Road, Surat, 395002 (Gujrat)
Mobile : 75750 41434

EVERGREEN CREATION
Address : 369, Abhishek Textile Market, Ring Road, Surat, 395002 (Gujrat)
Mobile : 97279 82406, 98280 18707

धार्मिक/सामाजिक आयोजनों में
जैन गज़ट को दानराशि भेजना न भूले

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरू जी, मेरे पिताजी और चाचा जी में बहुत विवाद रहता है, दोनों काम भी एक साथ करते हैं, क्या उपाय करें? - अशोक जैन मनचंदा, पुणे

उत्तर - दोनों को श्री शान्तिनाथ चालीसा पढ़ने के लिये कहें तथा साथ ही मून स्टोन का लॉकेट सोमवार को धारण करायें।

प्रश्न 2. धन लाभ के लिये किसी भी मंत्र या स्तोत्र की शुरूआत कब करनी चाहिये - रमेश चन्द काला, बीकानेर

उत्तर - धन लाभ के लिये मंत्र या स्तोत्र की शुरूआत रविवार को करनी चाहिये।

प्रश्न 3. गुरु जी, हमें किसी ने णमोकार महामंत्र उल्टा पढ़ने के लिये कहा है, क्या इसमें कोई दोष है - शैलेन्द्र भाई शाह, अहमदाबाद

उत्तर - विशेष परिणाम पाने के लिये हम णमोकार महामंत्र को उल्टा भी पढ़ सकते हैं।

प्रश्न 4. दोनों बाजुओं में बेहद दर्द रहता है - कल्पना जैन, माडल टाउन, दिल्ली

उत्तर - आपको माणिक्य रत्न की अंगूठी सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में रविवार को धारण करनी चाहिये तथा श्री पदमप्रभु जी का चालीसा सूर्य उदय के समय पढ़ना चाहिये।

प्रश्न 5. नये व्यापार की शुरूआत कब करनी चाहिये - अंकुर जैन, श्रीनगर, दिल्ली

उत्तर - अंकुर जी, अगर आप नये व्यापार के लिये दो माह रूकेंगे तो ज्यादा लाभ होगा तब तक इन्तजार करें।

प्रश्न 6. काफी समय से नौकरी की तलाश में हूं, कब सफलता मिलेगी - नितिन, देहरादून

उत्तर - पन्ना रत्न गले में लॉकेट के रूप में धारण करें तथा श्री भक्तामर जी का 28वां काव्य यंत्र के सामने पढ़ें, जल्द नौकरी मिलेगी।

प्रश्न 8. क्रोध बहुत आता है - पुष्पा जैन, हरिद्वार

उत्तर - मंगलवार को ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः की माला फेरें तथा रोजाना 5 मिनट का मौन रखें, परिवर्तन नजर आयेगा।

गुरु जी से संपर्क सूत्र- 9990402062, 8826755078

पश्चिम बंगाल महासभा के चुनाव संम्पन्न

कोलकाता, 23 जुलाई 2023। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन धर्म संरक्षिणी, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी, महिला एवं युवा महासभा की एक मीटिंग 1.30 बजे श्री दिगम्बर जैन बालिका विद्यालय, मालापारा, जारबागन, कोलकाता (प. बंगाल) में आयोजित की गई। इस मीटिंग में आगामी तीन वर्षों के लिए धर्म संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी पश्चिम बंगाल महासभा के चुनाव श्री राजकुमार जैन सेठी, राष्ट्रीय महामंत्री तीर्थ संरक्षिणी महासभा (कोलकाता) के मार्गदर्शन में चुनाव पर्यवेक्षक श्री अशोक कुमार सेठी, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, तीर्थ संरक्षिणी महासभा (बंगलौर), श्री गजेन्द्र जैन पाटनी, केन्द्रीय उपाध्यक्ष-महासभा, कुंकुरी (छत्तीसगढ़) एवं श्री अशोक कुमार चूड़ीवाल, केन्द्रीय उपाध्यक्ष, तीर्थ संरक्षिणी महासभा, बरपेटा रोड (आसाम) द्वारा कराये गये। सर्वप्रथम मंगलाचरण के पश्चात् पूज्य मुनि श्री 108 प्रशम सागर जी महाराज की कोलकाता में हुई समाधि एवं पूज्य आचार्य कामकुमार नंदी जी महाराज की घृणित हत्या पर दो मिनट का मौन रखा गया, तत्पश्चात् चित्रानावरण एवं दीप प्रज्वलन श्री भागचन्द्र जी पहाड़िया एवं महावीर प्रसाद जी गंगवाल द्वारा किया गया। पश्चिम बंगाल के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द्र जी बड़जात्या द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया, तीर्थ संरक्षिणी महासभा पश्चिम बंगाल प्रान्त के अध्यक्ष श्री निर्मल पुष्पा बिन्दायक्या द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार जैन सेठी द्वारा तीनों शाखाओं के कार्यों की जानकारी के पश्चात् प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार पत्रिका माह जुलाई 2023 का विमोचन श्री अशोक कुमार सेठी, श्री गजेन्द्र जैन पाटनी एवं श्री अशोक जी चूड़ीवाल के कर कमलों से हुआ। उपस्थित समूह से दिये गये सुझावों एवं नामों पर विचार करके धर्म एवं श्रुत संवर्धिनी महासभा के अध्यक्ष का चुनाव निर्विरोध किया गया। जिसमें धर्म संरक्षिणी महासभा के अध्यक्ष श्री अजित जी पाण्डया बने, प्रस्तावक श्री कैलाशचंद बड़जात्या, अनुमोदक श्री महावीर जी गंगवाल, श्रुत संवर्धिनी महासभा के अध्यक्ष श्री रोहित जी गंगवाल बने प्रस्तावक श्री सुमित जैन, अनुमोदक श्री निर्मल पुष्पा बिन्दायक्या कोलकाता थे। तीर्थ संरक्षिणी महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल पुष्पा बिन्दायक्या हैं। नव निर्वाचित पदाधिकारियों के उद्‌बोधन् के पश्चात् मीटिंग समाप्त हुई। मीटिंग का संचालन श्रीमती सुधा जी जैन द्वारा किया गया।

- राजकुमार जैन सेठी,
महामंत्री, तीर्थ संरक्षिणी महासभा

आप स्वयं आए...
अपनों को लाए....
अपना भाग्य जगाए.....

देश की राजधानी दिल्ली के
ऋषभ विहार में विराजित

परम पूज्य आचार्य श्री 108 आदिसागर जी महाराज (अंकलीकर)
परम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य
परम पूज्य प्राकृत ज्ञान केसरी, प्राकृत मार्तण्ड, राष्ट्र सन्त
आचार्य श्री 108 सुनील सागर जी महामुनिराज
(सबसे बड़े संघ 51 पिच्छी) के पावन सानिध्य में आयोजित
"जैन ज्योतिष जिज्ञासा समाधान"

- अपनी कुण्डली से स्वयं जाने कब होगा आपका भाग्योदय
- स्वयं जानें क्या आप मांगलिक है
- स्वयं जाने क्या है आपकी जन्म राशि
- अन्य ज्योतिषी जिज्ञासाओं का समाधान जैन आगम के द्वारा

मुख्य अतिथि एवं वक्ता
'आदिनाथ चैनल फेम'
विख्यात जैन ज्योतिषाचार्य, एवं हस्तरेखा विशेषज्ञ
श्री रवि जैन गुरुजी
मो. 8826755078
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद, पंजी

गरिमामयी उपस्थिति
दिल्ली एनसीआर क्षेत्र के प्रख्यात
जैन ज्योतिषी व वास्तुविद्

दिनांक 31 जुलाई 2023 | दिन सोमवार | प्रातः 8:00 बजे से

स्थान :- सन्मति समोशरण, निकट दिगंबर जैन मंदिर, ऋषभ विहार दिल्ली-92

8:15 बजे तक उपस्थित होने वाले 11 पुण्यशाली व्यक्तियों को मिलेगा रवि जैन गुरुजी से निःशुल्क कुंडली परामर्श

आप अपनी कंप्यूटर से बनी कुंडली अवश्य साथ लेकर आएं!

आयोजकः - श्री दिगंबर जैन सभा (रजि.) ऋषभ विहार दिल्ली 92
निवेदकः सकल जैन समाज, ऋषभ विहार, दिल्ली-92

संपर्क सूत्रः
चेयरमैन- इंजी. विजय कुमार जैन मो. 9811695459
अध्यक्ष- सुनील कुमार जैन मो. 9720471212
महामंत्री- विपुल जैन मो. 9868108535

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (धर्म संरक्षिणी, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवंधिनी,)कर्नाटक प्रान्त महासभा के चुनाव में निम्न केन्द्रीय चुनाव पर्यवेक्षक के नेतृत्व में
श्री डी.ए पाटील-राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महासभा, श्री महेन्द्र कुमार धाकड़ा-राज्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी महासभा,
श्री सरोज कुमार बाकलीवाल-राज्याध्यक्ष धर्म संरक्षिणी महासभा
(मुख्य अतिथि - श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या - राष्ट्रीय महामंत्री)
धर्म संरक्षिणी,तीर्थ संरक्षिणी,श्रुत संवर्धिनी महासभा के
अध्यक्ष
निर्वाचित होने पर
हार्दिक बधाई एवं शुभकामना

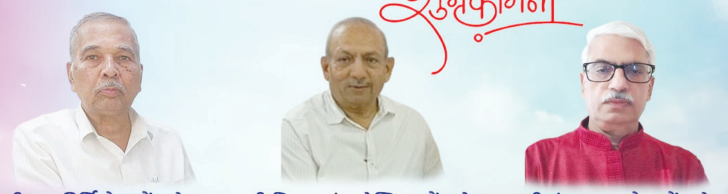

श्री राजकीर्ति जैन (बैंगलोर) अध्यक्ष - धर्म संरक्षिणी महासभा
श्री निहाल चंद ठोलिया (बैंगलोर) अध्यक्ष - तीर्थ संरक्षिणी महासभा
श्री जंबू कुमार जैन (बैंगलोर) अध्यक्ष - श्रुत संवर्धिनी महासभा

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
गजराज जैन गंगवाल - राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रकाशचंद जैन बड़जात्या - राष्ट्रीय महामंत्री
पवन जैन गोधा - राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
सरिता जैन - राष्ट्रीय अध्यक्षा - महिला महासभा
राजकुमार जैन सेठी - राष्ट्रीय महामंत्री - तीर्थ संरक्षिणी महासभा
डॉ निर्मल कुमार जैन - राष्ट्रीय महामंत्री- श्रुत संवर्धिनी महासभा
डॉ ज्योत्सना जैन - राष्ट्रीय महामंत्री - महिला महासभा
संदीप जैन - राष्ट्रीय महामंत्री - युवा महासभा
महासभा के समस्त पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण
djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर
मो. 09425412374
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक
प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क- 7607921391, 7880978415, 9415108233
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

चातुर्मास पर विशेषः संस्कृति का सम्मेलन है चातुर्मास

श्रमण, वैदिक और बौद्ध संस्कृति में चातुर्मास की व्यवस्था है। साल के सावन, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक इन चार माह में चातुर्मास होता है। कैलेंडर के अनुसार ये माह वर्षा काल के माने गए हैं। इन दिनों अधिक वर्षा होने से जीवों की उत्पति अधिक होती है। ऐसे में उन जीवों की हिंसा न हो जाए, इस भाव से चातुर्मास इन चार माह में ही होता है। चातुर्मास आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी से प्रारंभ होता है और कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि तक माना जाता है। चातुर्मास धार्मिक जगत की धुरी है। वर्षावास या चातुर्मास का न केवल पर्यावरण व कृषि के दृष्टिकोण से वरन् धार्मिक दृष्टिकोण से भी विशेष महत्व है। वर्षा ऋतु में जीवोत्पत्ति विशेष रूप से हो जाती है। पानी के सम्पर्क में आकर भूमि में दबे बीज अंकुरित हो जाते हैं। सीलन, फलन, फफूंद, काई की उत्पत्ति हो जाती है। त्रस व स्थावर जीवों की अधिकता के कारण उनकी विराधना की संभावना अधिक हो जाती है। जगह-जगह जल एकत्रित हो जाने से एक गांव से दूसरे गांव या शहर तक पगडण्डी द्वारा विहार संभव नहीं हो पाता है। आगम शास्त्रों में भी स्पष्ट निर्देश हैं कि चातुर्मास के दौरान साधु-साध्वियों को विहार नहीं करना चाहिए। चातुर्मास का संयोग हमारी मनःस्थिति में भरे विभिन्न प्रदूषणों को समाप्त करने के साथ ही दुष्प्रवृत्तियों को सत्य वृत्तियों में बदलने का कार्य करता है। मन, वचन और शरीर को शुद्ध करने का पर्व चातुर्मास है। इन चार महीनों में कई धार्मिक पर्व आते हैं जो मनुष्य को धर्म अध्यात्म के करीब लाने का कार्य करते हैं। आध्यात्मिक जागृति का पर्व चातुर्मास माना जाता है। यह जीवन को साधने का स्वर्णिम समय होता है। इन दिनों अधिक वर्षा होने से जीवों की उत्पति अधिक होती है। ऐसे में उन जीवों की हिंसा न हो जाए, इस भाव से जैन संत-साध्वी एक स्थान पर चार माह रुककर साधना करते हैं इसे ही चातुर्मास कहा जाता है। श्रावक और संत के जुड़ाव का वाहक चातुर्मास दो किनारों को जोड़ने का काम करता है। धर्म रूपी रथ को चलाने के लिए दो पहिए हैं, एक श्रावक और दूसरा संत। इन दोनों को एक-दूसरे से जोड़ने का काम करता है चातुर्मास। इस काल में दोनों ही एक-दूसरे को समझते हैं और श्रावक साधु की साधना में सहयोगी बनकर उन सब साधनों को उपलब्ध करवाता है जो उसकी साधना में अत्यन्त आवश्यक हैं और साधु, श्रावक को पाप और कषाय से बचने का मार्ग बताकर, उसके पापों का प्रक्षालन करने के लिए प्रायश्चित देता है। श्रावक साधु की संगति में अपने वैराग्य एवं संयम साधना की वृद्धि कर उनकी साधना में सहयोगी बने। भौतिक संसाधनों से उन्हें दूर रखे, लौकिक कार्यों में न उलझाए, पारिवारिक कृत्यों की चर्चा न करके धार्मिक चर्चा करें। शंका समाधान करके जिनवाणी का श्रद्धान बढ़ाएं। यह समय आध्यात्मिक क्षेत्र में लगातार नई ऊंचाइयों को छूने हेतु प्रेरित करने के लिए है। अध्यात्म जीवन विकास की वह पगडंडी है जिस पर अग्रसर होकर हम अपने आत्म स्वरूप को पहचानने की चेष्टा कर सकते हैं। पूरे चातुर्मास अर्थात् 4 महीने तक एक क्षेत्र की मर्यादा में स्थायी रूप से निवासित रहते हुए जैन दर्शन के अनुसार मौन साधना, ध्यान, उपवास, स्व अवलोकन की प्रक्रिया, सामयिक और प्रतिक्रमण की विशेष साधना, धार्मिक उद्बोधन, संस्कार शिविरों से हर शख्स के मन मंदिर में जनकल्याण की भावना जाग्रत करने का सुप्रयास जारी रहता है। तीर्थकरों और सिद्ध पुरुषों की जीवनियों से अवगत् कराने की प्रक्रिया इस पूरे वर्षावास के दरमियान निरंतर गतिमान रहती है तथा परिणति सुश्रावकों तथा सुश्राविकाओं के द्वारा अनगिनत उपकार कार्यों के रूप में होती है।

चातुर्मास संस्कृति की ध्वजा को फहराता है: चातुर्मास धर्म और संस्कृति का एक बहुत बड़ा सम्मेलन है। चातुर्मास संस्कृति की ध्वजा को फहराता है। चातुर्मास आत्म कल्याण मात्र के लिए नहीं है, चातुर्मास उनके लिए भी किया जाता है जो तुम्हारे पैर से कुचल सकते हैं, चातुर्मास वह संस्कृति है जिसमें जीने दो की बात है। चातुर्मास में संत अपने लिए ही नहीं बैठते दूसरे के लिए भी बैठते हैं। चातुर्मास जीने दो के लिए किया जाता है। जैन परंपरा में चातुर्मास अषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी से कार्तिक वदी अमावस्या तक होता है।

साधु का चातुर्मास पराधीन नहीं स्वाधीन होता है : चातुर्मास से संस्कृति का निर्माण होता है। साधु का चातुर्मास पराधीन नहीं स्वाधीन होता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में आज चातुर्मास के दो रूप हैं। श्रावक अपना चातुर्मास मांगलिक बनाएं। यह चातुर्मास घर-घर में खुशहाली देने वाला बने, हर घर में सुख-समृद्धि हो, चेहरों पर रौनक छाई रहे।

चातुर्मास में अपनी दैनंदिनी में परिवर्तन लाएं: चातुर्मास में श्रद्धालु भी अपने जीवन में परिवर्तन लाएं। भोजन की थाली में बदलाव लाएं, बुरा देखने -सोचने में परिवर्तन आना चाहिए। घर को 4 महीने पावन बनाने की कोशिश करें। चातुर्मास काल में त्याग, वैभव, तप, व्रत और संयम का सागर लहराने लगे, ऐसा सामूहिक प्रयत्न होना चाहिए। हम साधना व आराधना के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की उपेक्षा करते हैं। हमारी जीवन-शैली अहिंसा से प्रभावित हो। हम जितना अधिक संयम का अभ्यास करेंगे, उतना ही अहिंसा का विकास होगा। भगवान महावीर ने चातुर्मास काल में जिनवाणी द्वारा जीने की कला से विश्व को अवगत कराया है। अगर उसके अनुरूप हम चलें तो निश्चित ही यशस्वी मानव बन सकते हैं। जप, तप, सत्संग आदि में समर्पित भाव से सहभागी बनने से ही चातुर्मास की विशेषता अक्षुण्ण रहेगी। चातुर्मास उस दर्पण के समान है, जिसमें झांककर हम जान सकते हैं कि हम धर्म के कितना नजदीक हैं। धर्म का कितना पालन कर रहे हैं, कितनी कलंक- कालिमा हम पर लगी हुई है। चातुर्मास व्यक्ति की उसके व्यक्तित्व से पहचान कराने का पर्व है। चातुर्मास को संस्कार पर्व भी कह सकते हैं। चातुर्मास में साधु मानव में मानवता के संस्कार भरने का कार्य करता है। चातुर्मास धर्म रूपी रथ को चलाने के लिए श्रावक और संत दोनों को एक-दूसरे से जोड़ने का पुनीत काम करता है।

-सुनील जैन 'संचय', प्रधान सम्पादक

चातुर्मास - महापर्व का त्यौहार है

-मुनि श्री अर्पित सागर जी महाराज

(आचार्यश्री वर्धमान सागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य)

शुचि परिवर्तन प्रकृति का देता जन आहलाद, भाव विशुद्धि पुण्य कृत्य, श्रेय-श्रेय सुखसाद। परिवर्तन स्वयं में एक स्फूर्ति प्रदायक प्रक्रिया है। ऋतु परिवर्तन का समय सदैव ही उत्सव-त्यौहार के रूप में हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है। वर्षा मौसम के चातुर्मास पूर्णिमाओं को पर्व बना देते हैं। कभी गुरू पूर्णिमा, कभी रक्षाबन्धन, पूर्णिमा पर्व, दशलक्षण पर्व, रत्नत्रय पूर्णिमा तो कभी शरद पूर्णिमा आदि बार-बार चांद देकर चातुर्मास में वृष पूर्ण चन्द्र की चन्द्रिका, उपहारों से झोली भर देते हैं। चातुर्मास में व्रतों का संयम का पुण्य है। मानव जन्म सुन्दर खुशबूदार दुर्लभ गुलदस्ता है। इसमें संयम, सदाचार, प्रेम वात्सल्य, करूणा और देवत्व के पुण्य सजाये गये हैं जो सर्वत्र अपनी सुगंधि से प्राणी मात्र को सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की बाड़ लगाकर सबको भगवान बनने का संदेश दिया। इस समय सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की चिन्तामणी बुला-बुलाकर बांटी जा रही है, लगता है हर पतित-पावन हो जायेगा। भव्यत्व का प्रसाद हमेशा मिलता भी कहां है? धर्म मार्ग पर लगने की प्रेरणा संसार समुद्र से तिरने की कला श्रद्धावान विवेकशील, कर्मयोगी श्रावक ही ले पाता है। श्रावण प्रतिपदा के बाद मोक्ष सप्तमी भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण महोत्सव मनाया जाता है, श्रावणी पूर्णिमा रक्षाबन्धन पर्व पर मुनि रक्षा का संकल्प उत्साह भर देता है। भाद्रमास लगते ही सोलहकारण भावना सिद्धत्व प्राप्ति के साथ सर्वोपरि पर्याय पुण्यकला अरिहन्ता बनने के सोलह मंगल सूत्र गुरूवाणी में मुखरित हो उठते हैं। जीवन का सौभाग्य दर्शन विशुद्धि से शिवत्व का शाश्वत सुख साथ ही लोकोत्तर पर्याय द्वारा जन-जन के दुख निवारण की पृष्ठभूमि बना देता है। आत्म कल्याण का सार तत्व अनायास ही हस्तगत हो जाता है। मानव जीवन की सफलता और सार्थकता जैसे प्रकृति-प्रदत्त बन गयी है। मानव पर्याय का सर्वोत्कृष्ट उपहार रत्नत्रय झोली में आ गिरता है। अनन्त चतुर्दशी अनन्त सुख देने को खड़ी होती है। यह पावन पर्व अनन्त सुख सिद्धत्व का आरक्षण करने ही आता है जो भाग्यवान-पुण्यवान निकट भव्य होते हैं पा लेते हैं। जीवन की धन्यता और भव्यता पूर्ण हो जाती है। क्षमावाणी के महोत्सव से मनोमालिन्य की रज को हटा गले से गले मिला हृदय में प्रेम वात्सल्य का भाव ओतप्रोत कर देती है। यह माह चातुर्मास का उतार का होता है। अतः श्रमण-श्रावक अधिक से अधिक उपलब्धि संरक्षित करने में जुट जाते हैं। निर्वाण महोत्सव दीपावली का पावन पर्व महाउत्सव के रूप में मनाया जाता है। सायंकाल में गुरू गौतम स्वामी केवलज्ञान की प्राप्ति बन जाता है। भैया दूज विश्व बन्धुत्व का पावन त्यौहार है। इस प्रकार यह चातुर्मास स्थापना पर्व साथ समापन होने लगता है। चातुर्मास पर्व त्योहार को अपने जीवन में उतार कर जीवन को सफ्ल और सार्थक बनावें। यह चातुर्मास चार माह आत्म को धर्म मार्ग मार्ग पर चलने का सही मार्ग बताता है।

प्रेषक-महावीर प्रसाद अजमेरा, संवाददाता

आगम के आलोक में चातुर्मास का महत्व

डॉ. नरेन्द्र कुमार भारती

भारतवर्ष धर्म एवं अध्यात्म प्रधान देश है। इसकी संस्कृति में धर्म, आचार, विचार और मानवता को सर्वोपरि महत्व दिया गया है। इस देश की दो प्रमुख संस्कृतियाँ रहीं हैं- वैदिक संस्कृति और श्रमण संस्कृति। दोनों संस्कृतियों में त्याग को महत्व दिया गया है। अहिंसा को ध्यान में रखकर जीवन व्यतीत करने की भावना हमारे ऋषि-मुनियों में आरंभिक काल से रही है। वैदिक संस्कृति में क्रिया काण्डों और यज्ञ को महत्व दिया गया तो श्रमण संस्कृति में अध्यात्म भावना को सर्वोपरि मानकर तप साधना हेतु त्याग मार्ग पर जोर दिया गया। साधना का तात्पर्य है संयम को धारण करना। गृहस्थ जीवन को त्याग कर व्यक्ति जब मुनि बनता है तब उसे श्रमण कहा जाता है। श्रमण का अर्थ होता है श्रम करने वाला। यहाँ श्रम से तात्पर्य कर्मों के क्षय के लिए तपस्या करने वाले व्यक्ति से है। कर्मक्षय से जीव मुक्ति को प्राप्त होता है अतः श्रमण हमेशा मुक्ति मार्ग पर अग्रसर रहता है।

आचार्य कुंदकुंद स्वामी ने कहा है - यदि दुख से छुटकारा पाना चाहते हो तो श्रामण्य मुनि पद को प्राप्त होओ। अतः अध्यात्म में रूचि रखने वाला व्यक्ति सांसारिक जीवन का त्याग कर मोक्ष मार्ग पर अग्रसर होकर ज्ञान ध्यान और तपस्या में लीन रहकर आत्म कल्याण हेतु धर्म साधना करता है। धर्म साधना में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य रूप महाव्रतों के पालन को अत्यंत महत्व दिया गया है। धर्म में अहिंसा को प्राथमिकता इसलिए दी गई है कि इससे मन, वचन और कर्म शुद्ध रहता है। श्रमण (जैन) परंपरा में साधुगण सर्वत्र यंत्र-तंत्र विचरण करते हुए आत्म कल्याण हेतु धर्म साधना तो करते ही हैं, श्रावकों को भी धर्म मार्ग पर लगाते हैं। मुनियों के लिए निर्देश है कि उन्हें गांव में एक दिन और नगर में पाँच दिन ठहरना चाहिए। दिगंबर जैन साधु नग्न रहते हैं। नग्न रहने के कारण उन्हें दिगंबर कहा जाता है अतः साधु एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए विहार करें तो साधुओं के विहार में कोई बाधा न आवे इसलिए श्रावकों को गंतव्य तक पहुंचाने के लिए अवश्य सचेत रहना चाहिए। भारतवर्ष में वर्ष को बारह माह में बांटा गया है। मौसम की दृष्टि से इन्हें गर्मी, सर्दी और वर्षा इन तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। सभी ऋतुओं में मुनियों एवं साधुओं की साधना निरंतर चलती रहती है। वर्षा ऋतु में सारे देश में वर्षा होती है जिसके कारण पृथ्वी हरित काया हो जाती है। अपराजित सूरि ने कहा है कि वर्षाकाल में स्थावर और जंगम सभी प्रकार के जीवों से पृथ्वी व्याप्त रहती है। उस समय भ्रमण करने से जीवों की विराधना होने से अहिंसा धर्म की रक्षा नहीं हो पाती। अतः ऐसी स्थिति में साधु वर्षाकाल के चार महीने में विहार (आवागमन) का त्याग करके एक ही स्थान पर रुक जाते हैं जिसे वर्षायोग या चातुर्मास स्थापना कहते हैं। यह वर्षायोग आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तक चलता है। साधु और श्रावक दोनों के लिए वर्षा योग का विशेष महत्व है। साधु एक स्थान पर रहकर ज्ञान और ध्यान में तो मग्न रहते ही है विशेष धर्म ग्रंथों के अध्ययन एवं स्वाध्याय के लिए विशेष समय मिल जाता है।

धार्मिक पर्वो यथा - अष्टान्हिका, रक्षाबंधन, दसलक्षण, क्षमावाणी आदि पर मन की मलिनता को दूर करने के लिए सार्थक प्रयास करने चाहिए। शास्त्रों में लिखा है कि मुनियों की सेवा करने वाला जीव नमस्कार करने से उच्च गोत्र को, दान देने से लक्ष्मी को, उपासना करने से सबके द्वारा की जाने वाली सेवा को और भक्ति से कीर्ति को प्राप्त होता है। मुनियों को प्रणाम करने से उच्च गोत्र, दान करने से भोग, सेवा करने से पूजा तथा भक्ति के रूप में स्तुति से यश प्राप्त होता है। आगम के आलोक में चातुर्मास या वर्षायोग अज्ञान रूपी अंधकार को समाप्त करने में सहायक है। अतः चातुर्मास का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है। साधुओं के चातुर्मास हम सभी के लिए सुख, शांति तथा मोक्ष प्राप्ति का साधन बने यही अपेक्षा है।

श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास की अवधारणा

प्रो. फूलचन्द्र प्रेमी

श्रमण जैन परंपरा में तो चातुर्मास को चार मास के लंबे महापर्व के रूप में आयोजित किए जाने का विधान है। वर्षाकाल के आरंभ से ही चार माह के लिए एक ही स्थान पर लंबे प्रवास में साधु-साध्वियों के ज्ञान, ध्यान और संयम साधना का लाभ समाज को प्राप्त होता है। चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थकर भगवान महावीर के अनेक चातुर्मास का विवरण हमें प्राकृत जैनागमों से प्राप्त होता है। इस चातुर्मास काल में अष्टाह्निक पर्व, रक्षाबंधन, पर्युषण-दशलक्षण सांवत्सरिक महापर्व, क्षमावाणी तथा तीर्थंकरों के पञ्च कल्याणकों जैसे अनेक पर्व भी मनाए जाते हैं। श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास अर्थात् वर्षावास, जैन मुनिचर्या का आचारगत अनिवार्य और महत्वपूर्ण योग है। इसे वर्षायोग, वर्षावास अथवा चातुर्मास भी कहा जाता है। वर्षा काल के चार महीने भ्रमण अर्थात् आवागमन, विहार आदि का त्याग करके एक स्थान पर रहने का विधान है। यदि कार्तिक मास में पुनः वर्षा हो जाए और मार्ग आवागमन के योग्य न रहे तो चातुर्मास के पश्चात् वहाँ पन्द्रह दिन और रह सकते हैं। किन्तु इन पाँच कारणों से विहार किया भी जा सकता है - 1. शरीर, उपकरण आदि के अपहरण का भय होने पर, 2. दुर्भिक्ष होने पर, 3. किसी के द्वारा व्यथित किये जाने पर अथवा ग्राम से निकाल दिये जाने पर, 4. बाढ़ आ जाने पर तथा 5. अनार्यों द्वारा उपश्रुत किये जाने पर। इस तरह जैन परम्परा में चातुर्मास का धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में विकास का महत्व तो है ही, इससे राष्ट्रप्रेम के साथ ही व्यक्ति और समाज को एक सूत्र में पिरोने का, वैर भाव दूर करके मैत्री, सौहार्द एवं समरसता का वातावरण निर्मित करने का महत्वपूर्ण उद्देश्य सिद्ध है।

तपोभूमि की यात्रा

आचार्य श्री शांति सागर जी (श्रद्धांजलि विशेषांक- जैन गजट दिनांक 18 मार्च, 1956 से)

लेखकः पं. शिखरचन्द जी जैन विशारद, सखावतपुरीय

गतांक का शेष.......................

मार्मिक अनुभव : 17 सितम्बर को जब मैंने महाराज के दर्शन किये तब मुझे यह कल्पना नहीं थी कि महाराज के सजीव रूप में यही अन्तिम दर्शन होंगे। 18 सितम्बर का प्रातःकाल माननीय पं. मक्खनलाल जी और मैं बावड़ी में स्नान कर ही चुके थे कि इतने में मालुम हुआ कि महाराज का स्वर्गवास हो गया। सुनकर हम लोगों का हृदय धक् धक् करके रह गया। हम तत्काल भाग चले कि जल्दी कपड़े बदलकर ऊपर महाराज के दर्शन हो जायें। मैं अपने कमरे में जाकर कपड़े बदल ही रहा था कि इतने में बीडकर जी ने आकर कहा कि कमेटी के मंत्री जी ने आपको आवश्यक काम के लिए बुलाया है। मैंने हजार बार मना किया कि अभी नहीं परन्तु उन्होंने नहीं माना। मैं उनके साथ गया और क्षेत्र कमेटी के मंत्री श्रीमान् माणिकचन्द वीरचन्द जी के सहयोग से महाराज के स्वर्गारोहण की सूचना तार टेलीफोन द्वारा सैकड़ों प्रमुख व्यक्तियों, शहरों, महासभा जैसी संस्थाओं एवं पत्र-पत्रिकाओं को देने में योग दिया। इस काम में काफी समय लग गया। इस कार्य को निपटाकर मैं जब तक ऊपर गया तब तक महाराज का निर्जीव शरीर बाहर लाया जा चुका था। काठ के पीठ पर पद्मासन में विराजमान महाराज की भव्य मूर्ति के आगे मैंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। महाराज का शरीर उसी रूप में नीचे लाया गया और अलंकृत विमान में रखा गया। फिर विमान को उठाकर क्षेत्र परिक्रमा करायी गई। मैं उस समय ऊपर था परन्तु ज्यों ही विमान उठा, मेरी आंखों में अचानक आंसू छल छला आये। विमान परिक्रमा के बाद नीचे पाण्डुक शिला पर रक्खा गया और वहां हजारों शोकाकुल जनता ने दर्शन किये। तदुपरान्त पर्वत पर निर्धारित स्थान पर महाराज का शरीर लाया गया। फिर भट्टारक लक्ष्मीसेन जी व क्षु. पार्श्वकीर्ति जी ने शास्त्रोक्त विधि विधान कराया फिर शरीर चन्दन की चिता पर रक्खा गया। कमर तक कापूर जैसे गन्ध-द्रव्यों से भर दिया गया और अभिषेक हुआ। बाद में चिता में आग दी गयी और वह देखते देखते धू-धू करके जल उठी। महाराज का तपःपूत शरीर देखते-देखते भस्म हो गया। दर्शकों की आंखें डबडबा आयीं। अचानक मुझे भ्रम हुआ कि आचार्य श्री की चिता धू-धू करके जल रही है। मैं चौंका, देखता क्या हूं कि प्रभात सूर्य की अरूण किरणें बिखरी मेघ मालाओं को अग्निशिखाओं की भांति प्रज्वलित कर रही हैं। मेरा स्वप्न भंग हुआ। अतीत की स्मृति में सारी रात बिन सोये बिता दी थी मैंने। 17 अक्टूबर बुधवार को सुबह हम बम्बई पहुंचे। उस समय हल्की बूंदाबांदी हो रही थी। सड़कों पर पानी भरा था जिससे यह विदित हुआ कि रात भर खूब पानी बरसा होगा।

मुनि श्रीनेमिसागर जी भेंट : स्नान-पूजन के बाद हमने श्री 108 नेमिसागर जी महाराज के दर्शन किये। वह हीराबाग में ही ठहरे हुए थे। हमें देखते ही उन्होंने आशीर्वाद दिया और बड़े ही स्निग्ध ढंग से बातचीत की। आचार्य महाराज की स्मृति में जैन गजट का श्रद्धांजलि विशेषांक निकल रहा है, यह जानकर वह प्रसन्न तो हुए, परन्तु साथ ही यह कहा कि ''आचार्य महाराज को श्रद्धांजलि अवश्य अर्पित करो, परन्तु भगवान जो जा रहे हैं, उसे रोकने का भी उपाय कर रहे हो कि नहीं?'' उनका संकेत अजैनों के जैन मन्दिरों में बलपूर्वक प्रवेश करने के आन्दोलन की ओर था। ''उस सम्बन्ध में भी हम सतर्क हैं, महाराज। महासभा अपनी सारी शक्ति उस कार्य में लगा ही रही है'' मैंने आश्वासन दिया। सोमसुन्दरम जी के एक प्रश्न के उत्तर में नेमिसागर जी ने कहा कि महाराज की सल्लेखना अपूर्व शान्ति एवं सम्यक्त्व पूर्वक सम्पन्न हुई है। यह उल्लेखनीय है, क्योंकि सल्लेखना में शरीर बहुत शिथिल हो जाता है। पफलतः मन पर उसका प्रभाव पड़ जाता है और व्रती का संकल्प यदि दृढ़ न हुआ तो मन और वचन पर उसका नियन्त्रण ढीला हो जाता है। यह तरह तरह की बातें करने लगता है। आचार्यश्री की संकल्प शक्ति की महिमा ऐसी थी कि छत्तीस दिन के दीर्घ उपवास के बावजूद अन्तिम घड़ी तक मन, वचन एवं काय पर उनका नियंत्रण रहा। यहां तक कि आखिरी सांस तक उनकी सुधबुध ज्यों की त्यों कायम रही, यह असाधारण साधना का फल था। इंगिनी-मरण इसी को कहते हैं। नेमिसागर महाराज से मिलने के बाद हम लोग संघपति गन्दनमल जी से मिलने

शेष पृष्ठ 07 पर.........

परम पूज्य आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् वंदनः पुण्यार्जक/नमनकर्ता

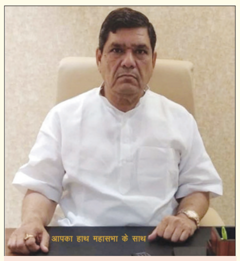

गजराज जैन गंगवाल
नई दिल्ली
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
चेन्नई
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

पवन जैन गोधा
नई दिल्ली
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

धर्मचन्द्र पहाड़िया
जयपुर
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

हेमचंद जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
रिषभ विहार, दिल्ली
मो. 9810015678

हंसमुख जैन गांधी
इंदौर
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

कपूरचन्द पाटनी
गुवाहाटी
प्रधान सम्पादक
जैन गजट
मो. 09854050969

राज कुमार जैन बड़जात्या,
चेन्नई अध्यक्ष
तमिलनाडु प्रांतीय महासभा

अशोक जैन छाबड़ा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, नीलम उद्योग, एस. सी. रोड
आठगांव, अपो. ऐक्सिस बैक, गुवाहाटी (आसाम) 781001,
मो. 9435048844

अशोक जैन चूड़ीवाल
मिशन रोड, पो. ऑ. बरपेटा
जिला-बरपेटा
आसाम-781315
मो. 09435124862

डॉ. रमा जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष- तीर्थ संरक्षिणी महासभा, ट्रस्टी - महासभा चेरिटेबुल ट्रस्ट, बी 254, चौथा माला, लेन नं. 3, मजलिस पार्क, आदर्श नगर, दिल्ली - 110033
मो. 9990454509

आनंद कुमार रत्नप्रभा सेठी
सिगनेचर स्टेट, 9 फ्लोर, अपोजिट- डी.जी.पी. ऑफिस, बी. के. काकोसी रोड, गुवाहाटी (आसाम) 781007,
मो. 9435012070

अजित पाण्ड्या
कोलकाता
उपाध्यक्ष- धर्म संरक्षिणी व श्रुत संवर्धिनी महासभा
महामंत्री- महासभा
पश्चिम बंगाल प्रांत
मो. 09339756995

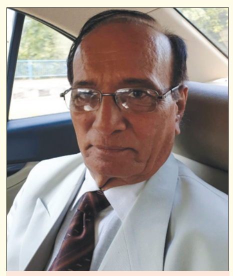

सुभाष काला
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
21, त्रिवेनी काम्प्लेक्स
रोशनपुरा, टी. टी. नगर
भोपाल (म.प्र.) 462003
मो. 9425006894

ज्ञानचन्द्र पाटनी, दुर्ग
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन
तीर्थ संरक्षिणी महासभा

गजेन्द्र जैन, कुनकुरी
राष्ट्रीय महामंत्री- श्री भारतवर्षीय खंडेलवाल दिगम्बर जैन महासभा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा,
मो. 09425251222

अजीत जैन
राष्ट्रीय मंत्री- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, मंत्री- तीर्थ संरक्षिणी महासभा, लोअर असम, दुदनई
जिला ग्वालपाड़ा,
मो. 957791934

एम. सी. जैन पत्रकार
चिकलठाणा
जैन गजट
संवाददाता
मो. 09423150116

एडवोकेट विकास जैन
दिल्ली
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

महावीर प्रसाद अजमेरा
वरिष्ठ
जैन गजट
संवाददाता
जोधपुर (राज.)

पंडित मधुकान्त जोशी
मेवाड़ केटरर्स
म. नं. 21 सखवाल नगर, रंगकारखाना, राम मंदिर, रतलाम (म. प्र.) 457001
मोबा.- 9981888980, 9425355761

तारामणि, राजेश कुमार-सविता, राकेश कुमार-नमिता, पुष्पक, लक्ष्य, लौकांतिक एवं भाविक सेठी,
जयपुर, कोलकाता

संदीप जैन
गुरुग्राम (हरियाणा)
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा महासभा
मो. 09810085563

अनिल कुमार डांडिया
एच-11, चितरंजन मार्ग
सी-स्कीम, जयपुर, राज.
मो. 9829063538

शेष पृष्ठ 06 का..........

कोठी पर गये। चौपाटी पर समुद्र को निहारती हुई खड़ी उस कोठी के ऊपर पहुंचे तो संघपति जी की ब्रह्मचारिणी सुपुत्री गुनमाला देवी ने हमारा स्वागत किया और कहा कि सेठजी भोजन कर रहे हैं। अतः कोठी के ऊपरी मंजिल पर बने मन्दिर जी में जाकर हमने देव दर्शन किये और दस मिनट में नीचे आये। इतने में सेठ जी भी भोजन करके आ गये थे। उन्होंने सोमसुन्दरम जी के प्रश्नों का विस्तृत उत्तर रात को देने का आश्वासन दिया। मुझसे उन्होंने कहा कि आचार्य श्री की स्मृति को अमर बनाये रखने के लिये उनकी याद में दुष्प्राप्य जैन धर्म ग्रन्थों का प्रकाशन करना उपयुक्त होगा।

संघपति जी से बातचीत : सायंकाल नियत समय पर हम

संघपति जी की कोठी पर दुबारा गये। उनकी सुपुत्री भी साथ थीं। संघपति जी ने बड़े स्नेह के साथ हमको अपने पास बिठाया और सोमसुन्दरम जी से कहा, ''पूछिए, क्या पूछना चाहते हैं?'' ''सेठ जी, सल्लेखना के समय आप अन्त तक महाराज के साथ थे। इस सम्बन्ध में आपके प्रत्यक्ष अनुभव का विवरण जानना ही मेरा उद्देश्य है, सोम जी ने कहा। बस, संघपति जी ने अपने अनुभव धड़ाधड़ सुनाने शुरू कर दिये। एक-एक वाक्य में उनकी गुरूभक्ति स्पष्ट झलक रही थी। उनकी सुपुत्री ने भी इसमें उनका साथ दिया। मैं आंखें बन्द किये सुन रहा था। मुझे लगा कि मैं अचानक कुन्थलगिरि पहुंच गया हूं और आचार्य महाराज के साथ हूं। संघपति जी की वर्णन शैली का यह जादू था। ''महाराज ने स्वेच्छा से सल्लेखना धारण की थी, या किसी के सुझाने पर?'' सोम जी ने पत्रकार-सुलभ निर्दयता के साथ पूछा।''स्वेच्छा से, इसमें शक भी हो सकता है?'' संघपति जी ने उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि मैंने और अन्य कुछ भक्तों ने महाराज से आग्रह किया था कि वह अभी सल्लेखना धारण न करें। परन्तु आचार्य श्री टस से मस नहीं हुए। गुफा के अन्दर महाराज पीछी पर सिर रखकर लेटे हुए हैं। बारामती के श्री शान्तप्पा वैद्य नाड़ी देखकर कह रहे हैं कि अभी दो-एक घंटों में प्राण चले जायेंगे। भट्टारक लक्ष्मीसेन जी, भट्टारक जिनसेनजी, क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति जी, सिद्धिसागर जी, सुमतिसागर जी आदि महाराज के सिरहाने बैठकर णमोकार मंत्र जप रहे हैं। गेंदनमल जी प्रार्थनामय हृदय के साथ बैठे कभी घड़ी की ओर कभी आचार्यश्री की ओर देख रहे हैं। इस तरह सुबह हो जाती है। आचार्य श्री जीवित हैं। बैद्य जी हार गये। सुबह करीब छः बजे हैं। गन्धोदक लेकर पुजारी आते हैं। क्षुल्लक सिद्धिसागर जी आचार्य श्री से कहते हैं। ''महाराज, गन्धोदक लाये हैं।'' सुनकर आचार्यश्री का म्लान मुखमण्डल प्रदीप्त हो उठता है।

-क्रमशः - शेष अगले अंक में

परम पूज्य आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् वंदनः पुण्यार्जक/नमनकर्ता

अशोक पाटनी
इम्फाल
मो. 09612328688

संजीव जैन
जैन प्लास्टिक, 369-ए,
मोतीनगर, ऐशबाग
लखनऊ मो. 9415017824

रमेश काला गुणमाला काला
हैदराबाद

सुशील कुमार बाकलीवाल
अध्यक्ष - श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ सेवा समिति (रजि.) अजमेर (राज.)
मो. 09829071798

बादामीलाल जैन
शीतल नाथ कॉलोनी
मु. पो. सलुम्बर, उदयपुर
मो. 9829550085

Vijay Kumar Jain
Nabhiraj Ji
Jamalpure
C/o Arihant Medical
& General Stores
Naichakur, Umraga,
Osmanabad (M.H.)
Mob- 9527691666

प्रमोद दोसी
ध. प. रूचि जैन
46, हीरामोती
गोपाल पथ
कृष्णा विहार
कॉलोनी, कुंदन
नगर, अजमेर
मो. 88909017710

अनिल लुहाडिया
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-
श्री भारतवर्षीय
दिगम्बर
जैन महासभा,
जेड-28, मानसरोवर
कॉलोनी मुरादाबाद,
मो. 9837030030

आदिश्वरलाल सिंघवी दीपक कुमार सिंघवी
सिंघवी ज्वैलर्स,
नागदा बाजार,
वोराबादी, सलुम्बर
भिंडरवाला, उदयपुर
मो. 9414758559

इंजी कैलाशचंद जैन
महासचिव-बुंदेलखंड सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोग परिषद लखनऊ, प्रांतीय प्रकल्प संयोजक-भारत विकास परिषद, अवध प्रान्त, उ.प्र. क्षेत्र-2, कार्यकारिणी सदस्य- श्री दिग. जैन मंदिर, इंदिरानगर लखनऊ, सदस्य- भा. जैन मिलन, साकेत, 9/336, इंदिरा नगर, लखनऊ मो. 9415470146

समाज की ज्वलंत सामयिक समस्याओं पर भेजें अपने विचार

आज हमारे जैन समाज, तीर्थ व धर्म को लेकर बहुत सी ज्वलंत समस्याएं हैं, जिनकी जानकारी हमें विभिन्न सोशल मीडिया के माध्यम से मिलती हैं। अतः हम जैन गजट के पाठकों से सविनय निवेदन करते है कि आज की इन ज्वलंत समस्याओं को उजागर करने व उनके समाधान हेतु आपके विचार लेख, कविता के माध्यम से हमें प्रकाशन हेतु निम्नलिखित माध्यम से प्रेषित करने की कृपा करें। jaingazette2@gmail.com- 7607921391, 7505102419,

जैन गजटः पर्यूषण पर्व एवं क्षमावाणी विशेषांक

दिगम्बर जैन समाज के पर्यूषण दशलक्षण पर्व इस वर्ष दिनांक 19 सितम्बर से 28 सितम्बर 2023 तक सम्पन्न होंगे। क्षमावाणी पर्व दिनांक 30 सितम्बर, 2023 को मनाया जायेगा। इस पावन अवसर पर जैन गजट के निम्न विशेषांक प्रकाशित होंगे- पर्यूषण पर्व विशेषांक- सोमवार दिनांक 11 सितम्बर, 2023 का अंक, क्षमावाणी विशेषांक- सोमवार दिनांक 25 सितम्बर, 2023 का अंक। पूज्य आचार्यों, लेखक, विद्वानों, कवियों से निवेदन है कि इन विज्ञापनों हेतु अपने लेख, रचनायें भिजवाकर सहयोग प्रदान करें। श्रेष्ठी महानुभावों, विज्ञापन दातारों से इन विशेषांकों हेतु विज्ञापन भी सादर आमंत्रित हैं। जैन गजट संवाददाताओं से निवेदन है कि वह भी इन विशेषांकों हेतु अधिकाधिक विज्ञापन प्राप्त कर सहयोग प्रदान करें। **-सम्पादक**

स्वागत है जैन गजट के नये आजीवन सदस्यों का

शान्तिदेवी गंगवाल
मदनगंज-किशनगढ़

महावीर प्रसाद जैन
सट्टी बाजार, बाराबंकी

वर्द्धमान जैन
सिविल लाइन्स, बाराबंकी

अनीता जैन
सरावगी मोहल्ला, बाराबंकी (उ.प्र.)

आप सभी महानुभावों ने 2100/- रु. प्रदान कर जैन गजट की आजीवन सदस्यता ग्रहण की है जिसके लिये जैन गजट परिवार आपका अत्यंत आभारी है।

Happy 25th Anniversary

श्रीमान् सुनिल जी एवं श्रीमती टीना जी कासलीवाल को शादी की 25वीं वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनायें

आपका दाम्पत्य जीवन, हमेशा हंसता, मुस्कुराता रहे

"कुछ फैसले आंखों से होते हैं,
दिल के फैसले बातों से होते हैं।
कोई लाख कोशिश कर ले,
पर कुछ रिश्ते खत्म सांसों से होते हैं"

पाण्डिचेरी के श्रीमान् मदन जी कासलीवाल के सबसे छोटे पुत्र श्रीमान् सुनील जी एवं टीना कासलीवाल (सुपुत्री श्रीमान् सुशील जी बाकलीवाल अजमेर) की शादी की 25वीं वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनायें।

-: शुभाकांक्षी :-
कासलीवाल एवं बाकलीवाल परिवार

विज्ञापन प्रेषकः श्रीमती अर्चना भरत कोठारी, पाण्डिचेरी

महासभा बेबसाइट पर उपलब्ध है

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन फार्म, महासभा सदस्य बनने हेतु सदस्यता फार्म

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा, आचार्य शांतिसागर छात्रवृत्ति योजना के तहत् अर्थाभावग्रस्त दिगम्बर जैन मेधावी छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा हेतु आचार्य शांतिसागर छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। आवेदन कैसे करें - आप सभी से निवेदन है कि आप अपने आस-पास अर्थाभावग्रस्त दिगम्बर जैन मेधावी छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा हेतु, आचार्य शांतिसागर छात्रवृत्ति योजना के लिए सम्पर्क करें अथवा महासभा की वेबसाइट लिंक - www.digjainmahasabha.org अथवा http:/www.digjainmahasabha.org/scholershipfrom.pdf से छात्रवृत्ति हेतु फार्म डाउनलोड कर अपने दस्तावेज संकलित करके महासभा कार्यालय में भिजवा देवें। बेबसाइट पर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का सदस्य बनने हेतु आनलाइन सदस्यता फार्म, माईनारिटी सर्टीफिकेट फार्म उपलब्ध है।

समाज से निवेदन है कि महासभा के सदस्य बनकर धर्म एवं समाज की सेवा हेतु सहयोग प्रदान करें। किसी भी प्रकार की समस्या हेतु कृपया ईमेल करें- digjainmahasabha@gmail.com सम्पर्क सूत्र - श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, खण्डेलवाल दिगम्बर जैन मंदिर परिसर, शिवाजी स्टेडियम के पीछे राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 दूरभाषः 011-23344668, 23344669

सुख अपने अंदर है - आचार्य प्रमुख सागर

गुवाहाटी। स्थानीय फैंसी बाजार स्थित भगवान महावीर धर्म स्थल में विराजित आचार्य श्री प्रमुख सागर महाराज ने अपने सायंकालीन प्रवचन में श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि सुख और दुख एक कल्पना मात्र है। जो वस्तु मन को भाय तो सुखी करती है और मन से उतर जाए तो दुखी करती है। जब मनुष्य अपने जीवन में किसी एक चुनौती को जीवन का केंद्र मान लेता है, तब वह जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। **-सुनील कुमार सेठी, संवाददाता**

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, जयपुर

आवश्यकता

1. छात्रावास अधीक्षक (एक) योग्यताः- कम्प्यूटर डिप्लोमा के साथ स्नातक उपाधि, जो प्रेम पूर्वक छात्रानुशासन में कुशल हो।

2. व्याख्याता (दो) योग्यताः- जैन दर्शन/ साहित्य/ व्याकरण विषय में आचार्य एवं शिक्षा शास्त्री/ वांछनीय-संस्कृत माध्यम से पढ़ाने की सामर्थ्य।

3. महिला व्याख्याता अंग्रेजी (एक) योग्यताः- अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि एवं बी. एड.।

सेवानिवृत्त भी स्वीकार्य, अन्य सुविधाओं के साथ समुचित वेतन। अन्तिम तिथि 10 अगस्त, 2023 तक आवेदन करें।

Email - drjaikumar52@gmail.com
सम्पर्क -9760002389

जिन्हें सुख की खबर नहीं वे दुख को ही सुख मानेंगे।

जैन गज़ट शिकायत 9415008344
जैन गज़ट

वर्षायोग में देश भर में जगह जगह विराजमान परम पूज्य आचार्य, मुनिराज/ आर्यिका माताजी, क्षुल्लक क्षुल्लिका जी एवं समस्त त्यागी वृंदों के श्री चरणों में शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

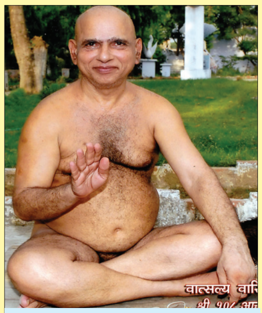
आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

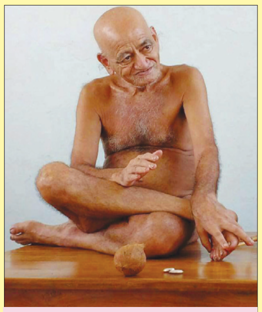
आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज

आचार्य श्री पुष्पदन्त सागर जी महाराज

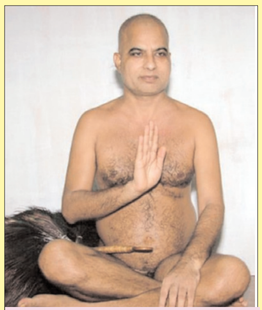
गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज

आचार्य श्री कुन्थु सागर जी महाराज

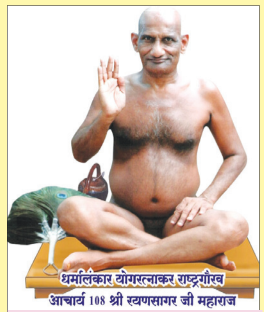
आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज

मुनि श्री पुण्य सागर जी महाराज

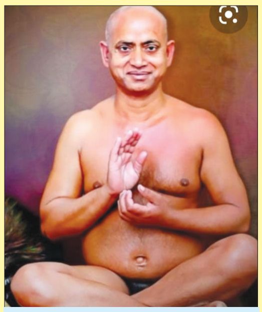
आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज

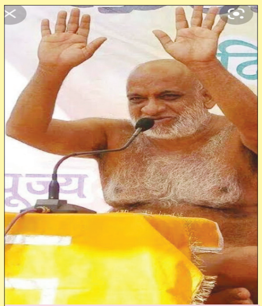
मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज

मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

आचार्य श्री पुलक सागर जी महाराज

आर्यिका श्री ज्ञान मती माता जी

आर्यिका श्री विशुद्ध मती माता जी

समस्त गुरू चरणों में शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

-: नमनकर्ता :-

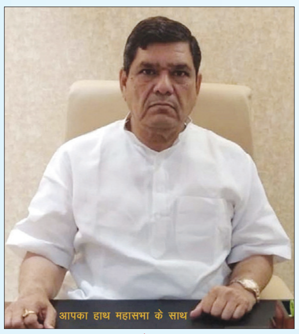
गजराज जैन गंगवाल
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
नई दिल्ली

प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
चेन्नई
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

पवन जैन गोधा
नई दिल्ली
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अजीत जैन
राष्ट्रीय मंत्री- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, मंत्री- तीर्थ संरक्षिणी महासभा, लोअर असम, दुदनई जिला ग्वालपाड़ा (आसाम)
मो. 9577919349

हंसमुख जैन गांधी
इंदौर
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

प्रमोद जैन
सम्मानित ट्रस्टी- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट, उपाध्यक्ष - श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
मो. 912206807

सुन्धासु कासलीवाल
अध्यक्ष-दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, कुन्दकुन्द भवन परिसर, नारायण सिंह सर्किल टोंक रोड, जयपुर
मो. 9829050067

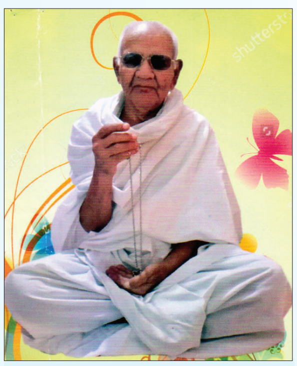
दशम प्रतिमाधारी
वयोवृद्ध विद्वान
बसन्त सागर जैन शास्त्री
शिवाड़ वाले
मो. 8107581334

अनिल लुहाड़िया
नई दिल्ली
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा
मो. 9810043418

Shrimati Archana Bharath Kothari
Sanskritik Mantri of Vivek Vigyan Mahila Mandal Pondicherry
Pratinidhi of Jain gazette
Mob- 9677554677

पंडित मधुकान्त जोशी
मेवाड़ केटरर्स, म. नं. 21 सखवाल नगर, रंगकारखाना, राम मंदिर, रतलाम (म. प्र.) 457001
मोबा. 9981888980, 9425355761

महावीर प्रसाद
वरिष्ठ जैन गजट संवाददाता
जोधपुर (राज.)
मो. 9314268528

श्राविकाश्रम इंदौर के 85 वर्ष: स्मारिका का विमोचन

राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

इंदौर। श्राविकाश्रम के निर्माण को 85 वर्ष पूर्ण होने पर सन्1938 से 2023 तक का इतिहास बताने वाली स्मारिका सचित्र परिचय 2023 का विमोचन हुआ। साउथ तुकोगंज स्थित श्री दिगम्बर जैन उदासीन श्राविकाश्रम, समवसरण मंदिर के प्रवचन हॉल में रविवार 16 जुलाई 2023 को आयोजित हुए एक भव्य समारोह में लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन प्रमुख अतिथि थीं। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय कुलपति श्रीमती रेणु जैन ने विशेष अतिथि के रूप में उक्त स्मारिका का विमोचन किया। प्रख्यात विद्वान पं. श्री रतनलालजी शास्त्री ने अध्यक्षता की।

मुख्य अतिथि पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने संबोधित करते हुए कहा कि स्वाध्याय से चंचल मन को नियंत्रित करके स्वयं को प्राप्त किया जा सकता है, देश में यदि बुरे लोग हैं तो अच्छे लोग अधिक हैं, उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए सकारात्मक वातावरण बनाने से स्वस्थ भारत का निर्माण संभव है। आश्रम की बहनें भी स्वयं का कल्याण करते हुए एक स्वस्थ भारत के निर्माण में सहयोग दे रही हैं। कुलपति श्रीमती रेणु जैन ने आश्रम की व्यवस्था एवं स्मारिका की भूरि-भूरि प्रशंसा की। विशेष रूप से वर्तमान में संतों पर हो रहे उपसर्गो पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी सुरक्षा पर समाज को विशेष ध्यान देना चाहिए। अतिथियों एवं पदाधिकारियों ने पंडितश्री रतनलालजी शात्री एवं डॉ. अनुपम जैन का स्वागत किया, तत्पश्चात स्मारिका के प्रधान संपादक जयसेन जैन एवं सह-संपादक डॉ.सुशीला सालगिया के साथ ही ब्र. विजया दीदी, ब्र. सरिता दीदी व सुरेश जैन का सम्मान किया गया। ट्रस्ट की अध्यक्ष श्रीमती इन्द्राणी कासलीवाल, पुष्पा कासलीवाल, तुकोगंज जैन समाज की अध्यक्ष श्रीमती रानी डोसी व ब्र. रेखा दीदी, शशि दीदी ने संबोधित किया। विमोचन कार्यक्रम में जैन समवशरण ग्रुप के प्रमुख अजित जैन का विशेष सहयोग रहा। मंगलाचरण आश्रमस्थ सभी दीदियों ने किया। जयसेन जैन ने आश्रम की स्थापना एवं व्यवस्था संबंधी जानकारी दी। डॉ. सुशीला सालगिया ने सचित्र स्मारिका का परिचय एवं प्रकाशन प्रक्रिया से अवगत कराया। संस्था की अधिष्ठात्री ब्र. लीला कुमारीजी, ट्रस्टी श्री अरुण सेठी, शरद सेठी, मणिप्रभा कासलीवाल, कमलेश कासलीवाल, अनिल भोजे सहित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन उपस्थित थे। प्रख्यात विद्वान डॉ. अनुपम जैन ने संचालन किया। कोषाध्यक्ष धनराज कासलीवाल ने आभार माना।

संत का आना ही पुण्य का उदय है

- आर्यिकारत्न संगममती माताजी

नैनवां, 25 जुलाई। सिद्धक्षेत्र तारंगाजी गुजरात में वर्षायोग कर रहीं आर्यिका श्री संगममती माताजी ने बताया कि संत आने पर पूरा नगर शहर गांव में एक उत्सव जैसा माहौल हो जाता है, संतों के आगमन पर पूरे नगर में खुशहाली होती है। संत जिनालय तीर्थों के दर्शन के लिए पैदल लंबी लंबी यात्राएं कर पहुंचते हैं और प्रतिमाओं के दर्शन कर पुण्य प्राप्त होना बताया है। संत आने का कभी भरोसा नहीं होता, संत पुण्य उदय से आते हैं। काजल से काला कलंक, पृथ्वी से पतला ज्ञान, पृथ्वी से भारी पाप बताया। घर गृहस्थी में किए गए पाप मंदिर में धोए जाते हैं, मंदिर में किए गए पाप कहीं पर धोने की जगह नहीं होती। सिद्धक्षेत्र तारंगाजी की अदभुत प्रतिमाओं के दर्शनों का लाम बहुत ही पुण्यशाली जीव को ही प्राप्त होता है, यहां आकर अपना सौभाग्य समझना चाहिए।

– महावीर सरावगी, संवाददाता

आस्थावान जेल में रहकर भी अपने आराध्य के चरणों में रहता है

- आचार्य श्री विमर्श सागर जी

जतारा (टीकमगढ़)। ताकत की गोलियां खा लेने से ताकत नहीं आ जाती, अरे ताकत तो व्यक्ति के पूर्व कृत पुण्योदय से आती है, अहंकार की चोटी पर बैठा व्यक्ति कभी वीतरागी निर्ग्रंथ मुनिराजों के चरण नहीं छू पाता, जो अहंकार से मस्तक ऊँचा उठाए है वह कभी उचाईयों को प्राप्त नहीं होता क्योंकि वह एक ठोकर लगते ही धूल में मिल जाता है किन्तु जो अपने पूज्य पुरुषों के चरणों में झुकता है यह निश्चित है सतत ऊँचाइयों को प्राप्त होता जाता है। ऐसा मांगलिक सदुपदेश जतारा नगर गौरव आचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए दिया। भारतीय जैन संगठन तहसील अध्यक्ष एवं जैन समाज उपाध्यक्ष अशोक कुमार जैन ने बताया कि भक्तामर महामंडल विधान के माध्यम से पुण्यार्जन करने का सौभाग्य श्रीमति सुधा-वीरेंद्र (ठेकेदार),

श्रीमती शालिनी -संजीव, आशी, ओम समस्त सिंघई परिवार (जतारा) एवं श्रीमती शशि-विनोद कुमार, पारुल, अभिषेक, मोनू, रूपल, रोहित जैन विवेक इलेक्ट्रॉनिक्स परिवार भिंड को सामूहिक रूप से प्राप्त हुआ।

श्री विनोद कुमार पाटनी मुनिसुव्रतनाथ दिगं. जैन पं. मदनगंज किशनगढ़ के बने निर्विरोध अध्यक्ष

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

मदनगंज-किशनगढ़। धर्म परायण नगरी मदनगंज किशनगढ़ में 23.7.2023 को श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन पंचायत की साधारण सभा तेली मोहल्ला स्थित आचार्य श्री धर्म सागर विद्यालय में आयोजित की गई। साधारण सभा की अध्यक्षता श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन पंचायत अध्यक्ष विनोद कुमार पाटनी ने की। साधारण सभा में पंचायत के सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। तत्पश्चात् चुनाव प्रभारी राकेश ईनाणी के निर्देशन में पंचायत की प्रबंध कार्यकारिणी समिति एवं कार्यकारिणी सदस्यों के चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ की। उरसेवा निवासी श्री विनोद कुमार पाटनी की समाज के प्रति सराहनीय सेवा एवं काबिलियत को देखते हुए समाज ने मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर पंचायत किशनगढ़ के हुए चुनावों पुनः निर्विरोध अध्यक्ष के लिए मनोनीत किया गया। चुने गये सभी पदाधिकारी इस प्रकार हैं- अध्यक्ष-श्री विनोद कुमार पाटनी (निर्विरोध), उपाध्यक्ष-श्री दिलीप कासलीवाल (निर्विरोध), मंत्री-श्री सुभाष बड़जात्या (निर्विरोध), उपमंत्री-श्री राजेश पांड्या (188 मत), कोषाध्यक्ष-श्री चेतन प्रकाश पांड्या (निर्विरोध) कार्यकारिणी सदस्य - श्री अनिल पाटनी फुलेरा 201 मत, श्री अमित बाकलीवाल (खंडाच वाले, इंद्रा नगर) 248 मत, श्री भागचंद गंगवाल (चकवाड़ा वाले, इंद्रा नगर) 196 मत, श्री जितेन्द्र कुमार पाटनी 207 मत, श्री मांगी लाल झांझरी लिचाणा वाले 247 मत, श्री मुकेश कुमार काला 214 मत, श्री मुकेश पाटनी (हाउसिंग बोर्ड) 190 मत, श्री प्रदीप कुमार गंगवाल 198 मत, श्री सुनील कुमार गदिया (बाबू भाई) 193 मत, श्री योगेश कुमार पाटनी 207 मत।

विरोध प्रदर्शन

लखनादौन, (सिवनी)। कर्नाटक में हुए मुनि श्री काम कुमार नंदी जी की हत्या के विरोध में जैन समाज लखनादौन सिवनी, सहित पूरे जिले की जैन समाज ने कर्नाटक में हुए जैन मुनि की हत्या के विरोध में लोगों ने अपनी प्रतिक्रिया दीं और भारत सरकार से यह मांग की कि आरोपी को फांसी दी जाए, कैंडल मार्च निकाला, हाथों में काली पट्टी बांधकर अपना विरोध प्रदर्शन कर विशाल रैली निकालकर अपनी आवाज को बुलंद किया।

–जैन गजट संवाददाता

लखनऊ में निकली विशाल रैली

परमपूज्य आचार्य श्री कामकुमार नन्दी जी महाराज की नृशंस हत्या के विरोध में 20 जुलाई को भारत बंद का आह्वान हुआ। जगह-जगह मौन जुलूस, रैलियां निकालकर विरोध प्रदर्शन किया गया। लखनऊ एवं सम्पूर्ण अवध जैन समाज की ओर से भी परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर जी के निर्देशन में मुनि श्री विशाल सागर जी की प्रेरणा से महारैली का आयोजन हुआ। श्री जैन धर्म प्रवर्धिनी सभा लखनऊ एवं सकल जैन समाज के सहयोग से यह कार्य संभव हुआ। हमलावरों को कठोर दण्ड दिया जाए, घटना की पुनरावृत्ति दुबारा न हो, दिगम्बर संतों की सुरक्षा उनके आहार-विहार-निहार की समुचित व्यवस्था हो। विहार के समय हर 15-20 किलोमीटर पर उनके ठहरने के लिए उचित स्थान की व्यवस्था हो । विहार के समय प्रशासन द्वारा विशेष सुरक्षा दिगम्बर संतों को उपलब्ध कराई जाए आदि प्रसंगों पर चर्चा हुई। सरकार को सकल जैन समाज की ओर से ज्ञापन दिया। परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ने महावीर पार्क लखनऊ से निकलने वाली विशाल रैली के लिए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य श्री ने कहा कि हम भगवान महावीर के वंशज हैं, हमारी जैन समाज अहिंसावादी है। संत की इस दर्दनाद घटना से समग्र जैन समाज में आक्रोश की लहर व्याप्त है।

मुनि कामकुमार नंदी जी को विनयांजलि

नई दिल्ली। श्री नेमीनाथ दि. जैन मंदिर मास्टर ब्लाक शकरपुर में चातुर्मास कर रहे मुनि श्री शिवानंदजी व प्रशमानंद जी के सान्निध्य में विगत दिवस आयोजित एक बैठक में कर्नाटक में पिछले दिनों आचार्य श्री कामकुमार नंदी जी की निर्मम हत्या पर गहरा रोष व दुःख व्यक्त किया और सरकार से अपराधियों को तुरंत कड़ी सजा देने व संतो की सुरक्षा की मांग की गई।

अहमदाबाद में महारैली

लकमी चंद जैन, संवाददाता

अहमदाबाद। आचार्य कुमार नंदी जी मुनि महाराज की वेदना युक्त निर्मम हत्या के विरोध में श्री मुनि सेवा समिति के कार्यकर्ताओं के कठिन परिश्रम एवं नेतृत्व में श्री दिगंबर जैन समाज द्वारा श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर उस्मानपुरा से दिनांक 20.07.2023 को प्रातःकाल अपने अनुष्ठान बंद करके पुरुष वर्ग श्वेत वस्त्र, महिलाएं केसरी पोशाक एवं बाएं हाथ पर काली पट्टी बांधे हाथों में बैनर लिए मोन रैली जयकारों के साथ निकाली गई। कलेक्टर महोदय को समिति के अग्रणी अभय कुमार साबरमती, लोकेश कोड़िया, सज्जन बंटी, योगेश शाह, ऋषभ जैन, अमृतलाल छोगालाल, महेश शिलालेख आदि द्वारा ज्ञापन दिया गया। इस बीच हजारों की संख्या में लोगों ने सड़क के मध्य बैठकर नवकार मंत्र की धुन एवं जयकारों के साथ बैठकर चक्का जाम कर दिया। ठीक 11:45 बजे रैली का विसर्जन हुआ।

श्राविकाश्रम ट्रस्ट इंदौर द्वारा जरूरतमंद छात्राओं को छात्रवृत्ति वितरित

राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

इन्दौर। साउथ तुकोगंज स्थित श्री दिगम्बर जैन उदासीन श्राविकाश्रम ट्रस्ट द्वारा नगर की कक्षा छठी से बारहवीं तक की समस्त जरूरतमंद छात्राओं को 350000/- रुपये (अक्षरी तीन लाख पचास हजार रुपये मात्र) छात्रवृत्ति का वितरण किया गया। पं.श्री रतनलाल शास्त्री, ट्रस्ट की उपाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा कासलीवाल, मंत्री जयसेन जैन, श्री अरुण सेठी, श्रीमती मणिप्रभा कासलीवाल तथा संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की गृहस्थ अवस्था की सगी बहनों ब्र. शांता दीदी, स्वर्णा दीदी सभी ने छात्राओं को विशेष परिश्रम कर आई.ए.एस., आई.पी.एस. आदि बनकर देश एवं समाजसेवा करने हेतु प्रोत्साहित किया और समस्त उपस्थित छात्राओं को आशीर्वाद दिया। ट्रस्टी श्री शरद सेठी ने संचालन किया व कोषाध्यक्ष श्री धनराज कासलीवाल ने आभार माना। इस अवसर पर आश्रमस्थ श्राविकाओं सहित अशोक खासगीवाला, डॉ. सुशीला सालगिया, श्रीमती कुसुम जैन तथा विशेष सहयोगी मनीष जैन, शुभम जैन व श्रीमती शीला पाटनी भी उपस्थित थे।

सुख आपके सम्यक निर्णय व प्रतीति का फल है।

युवा ही धर्म ध्वजा और संस्कृति को आगे बढ़ाने में सहायक है

मुनि सुयश सागर जी

झुमरीतिलैया। जैन संत मुनि श्री 108 सुयशसागर ने कहा कि युवा ही धर्म ध्वजा और संस्कृति को आगे बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं। धर्म और संस्कृति से ही राष्ट्र निर्माण होता है। जैन समाज झुमरीतिलैया के डेढ़ सौ युवाओं ने स्वयं अपने हाथ से खाना बनाकर झुमरीतिलैया में चातुर्मास कर रहे जैन संत मुनि श्री 108 सुयश सागर गुरुदेव को नवधा भक्ति पूर्वक आहार कराया। प्रतिदिन मंदिर जाने का, अहिंसा और शाकाहार का शपथ लिया। श्री दिगंबर जैन समाज झुमरीतिलैया में परम पूज्य चर्या शिरोमणि आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य जैन संत मुनि श्री 108 सुयशसागर जी महाराज का भव्य मंगल चातुर्मास बहुत ही भक्ति भाव के साथ हो रहा है। प्रातः सर्वप्रथम देवाधिदेव 1008 चन्द्रप्रभु भगवान का कलश और महाशान्तिधारा सभी युवाओं के द्वारा किया गया, इसके पश्चात् सभी श्रद्धालु जन स्टेशन रोड श्री बड़े मंदिर जी से धर्म ध्वजा बैंड बाजे के साथ नगर भ्रमण करते हुए पानी टंकी रोड जैन मंदिर पहुंचे। नवीन पांड्या जुलूस में सबसे आगे जैन धर्म ध्वज झंडा लेकर आगे आगे चल रहे थे। पानी टंकी रोड मंदिर में युवा गण ने विधि पूर्वक मुनि श्री को पड़गाहन किया। मुनि श्री ससंघ देव दर्शन के बाद विधि लेकर निकले जहाँ लगभग डेढ़ सौ श्रद्धालु युवा भक्त पड़गाहन कर रहे थे। मुनि श्री को 2 बार घूमने के साथ तीसरी चक्कर में भोजन करने की विधि मिली। विधि मिलते ही सभी खुशी से झूम उठे, उसके पश्चात् सभी युवा गणों ने लाइन से अपने गुरुदेव को आहार देकर धन्य माना और छोटे छोटे नियम लेकर अपने जीवन को संयम की मार्ग पर अग्रसर किया। आहार उपरांत मुनि श्री ने सभी युवाओं को आशीर्वाद दिया और कहा कि जैन समाज झुमरीतिलैया बहुत ही भाग्यशाली और पुण्यशाली है जहां के युवाओं में धर्म के प्रति श्रद्धा और भक्ति है। मंदिर में आहार चर्या के बाद मुनि श्री बैंड बाजे के साथ जैन भवन पहुंचे जहां पर उनका चातुर्मास कार्यक्रम चल रहा है। जैन समाज के मंत्री ललित सेठी, चातुर्मास संयोजक नरेंद्र झाझंरी ने पूरी जैन युवक समिति टीम को आज के कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई दी।

नवीन जैन/राजकुमार अजमेरा, संवाददाता

जीवन में दो तत्व है भाग्य और पुरुषार्थ

- आचार्य प्रमुख सागर जी

गुवाहाटी। स्थानीय फैंसी बाजार स्थित भगवान महावीर धर्म स्थल में उपस्थित आचार्य श्री प्रमुख सागर महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में दो तत्व हैं जिससे हम सबका जीवन चलता है। जैसे यदि किसी के जीवन में सुख है तो दुख भी है, राग है तो द्वेष है, पाप है तो पुण्य भी है आदि इसीलिए यह संसार दो का जोड़ है। एक भाग्य का और दूसरा पुरुषार्थ का। जन्म भाग्य का प्रतीक है और कर्म पुरुषार्थ का प्रतीक है। आचार्य श्री ने उदाहरण देते हुए कहा कि जीवन के रथ को सही पथ पर पहुंचाने के लिए दो पहियों की आवश्यकता पड़ती है। यदि रथ के दोनों पहिये मजबूत हों तो रथ पथभ्रष्ट नहीं हो सकता बल्कि नए-नए पथों का सृजन हो जाया करता है। इसी प्रकार जीवन के रथ में दो पहिए लगे हुए हैं एक भाग्य का और दूसरा पुरुषार्थ का। इन दोनों पहियों में से यदि एक भी पहिया डगमगाया तो समझ लेना अब गाड़ी ज्यादा दिन तक चलने वाली नहीं है। इससे पूर्व प्रातः आचार्य श्री ससंघ के सानिध्य में श्री जी की शांतिधारा करने का परम सौभाग्य हिरालाल-अशोक कुमार-विनोद कुमार पहाड़िया परिवार गुवाहाटी को प्राप्त हुआ।

- सुनील कुमार सेठी, संवाददात

बोर्ड गठित करने पर फागी जैन समाज ने बांटी मिठाई

फागी संवाददाता

राजस्थान सरकार के यशस्वी मुख्यमंत्री अशोक जी गहलोत के द्वारा राज्य जैन श्रमण संस्कृति बोर्ड गठित करने पर सकल जैन समाज फागी सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चौरु, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेड़ा, रेनवाल, माधोराजपुरा, चित्तौड़ा, पीपला एवं लदाना के सारे सकल जैन समाज ने मुख्यमंत्री अशोक जी गहलोत का कोटि कोटि आभार व्यक्त कर धन्यवाद दिया है। जैन गजट संवाददाता राजाबाबू गोधा ने अवगत कराया कि श्रमण संस्कृति बोर्ड गठित करने से समाज के साधु संतों की सुरक्षा सहित समाज हित की अनेक समस्याओं का निदान हो सकेगा। उक्त कार्यक्रम में समाज सेवी सोहन लाल झंडा, केलास कलवाडा, मोहनलाल झंडा, केलास कासलीवाल, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा, सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा, फागी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान महावीर प्रसाद जैन, पूर्व प्रधान सुकुमार झंडा, विनोद कलवाडा, सुरेंद्र बावड़ी, विमल कुमार कलवाड़ा, चातुर्मास कमेटी के अध्यक्ष अनिल कठमाना, कमलेश मंडावरा, कमलेश चोधरी, मितेश लदाना, त्रिलोक पीपलू तथा राजाबाबू गोधा सहित पूरी चातुर्मास कमेटी एवं सारे समाज ने शुभकामनाएं प्रेषित कर धन्यवाद दिया है।

28वां त्रिदिवसीय स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर में 24 जुलाई को त्रिवेणी नगर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर का 28वां त्रिदिवसीय स्थापना दिवस हर्षोल्लास व भक्तिभाव के साथ मनाया गया, कार्यक्रम में मंदिर समिति के मंत्री रजनीश अजमेरा ने बताया कि कार्यक्रम के प्रथम दिन प्रातः श्रीजी की शोभा यात्रा एवं सौभाग्यवती महिलाओं द्वारा कलश यात्रा निकाली गई जो विभिन्न मार्गो से होती पुनः मंदिर जी पहुंची जहां ध्वजारोहण श्रीमती मैना देवी छाबड़ा दही वाला परिवार ने किया तत्पश्चात् श्रीजी के अभिषेक व शांतिधारा हुई, जिसका सौभाग्य धर्मश्रेष्ठी राजकुमार पांड्या परिवार को प्राप्त हुआ तथा शाम को महाआरती हुई। मंदिर समिति के अध्यक्ष, महेन्द्र काला ने बताया कि कार्यक्रम के दूसरे दिन रात्रि में 48 दीपकों से भक्तामर का पाठ हुआ, समाजसेवी नरेश कासलीवाल ने बताया कि कार्यक्रम के अंतिम दिन पार्श्वनाथ विघ्न हरण विधान हुआ। इस अवसर पर विनोद जैन, राजस्थान जैन महासभा के राकेश छाबड़ा, अशोक पाटोदी, सचिन काला, कैलाश सौगानी, लोकेश जैन, नरेंद्र कुमार सेठी, प्रवीण पांड्या, अरिहंत जैन, राजस्थान जैन महासभा के पूर्व अध्यक्ष रतन छाबड़ा, अशोक पापड़ीवाल, महावीर कासलीवाल, शैलेन्द्र जैन, पुष्पेन्द्र अजमेरा, सुरेश सेठ, सुभाष काला, अंकुर पाटोदी, एम. के. जैन, कमल चांदवाड, विमल छाबड़ा, देवेंद्र, जितेंद्र कासलीवाल, सुशील बड़जात्या, सुनील लुहाड़िया, अशोक अजमेरा, विनोद अजमेरा, राजेश णमोकार, नितिन, नितेश छाबड़ा, विजय, अजय पांड्या, महिला मंडल की अध्यक्षा सन्तोष सौगानी, मंत्री शिमला पापड़ीवाल, बबीता लुहाड़िया, वंदना अजमेरा, प्रेमलता काला, मृदुला काला व युवा मंडल के गौरव कासलीवाल, अंशुल बडजात्या सहित बड़ी संख्या में समाज बन्धु उपस्थित थे।

शेष पृष्ठ 1 का ....

राजस्थान में राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड की अधिसूचना जारी, जैन समाज में हर्ष

4. जैन समुदाय के प्राचीन साहित्य का संकलन, संरक्षण एवं शोध कार्य पर राज्य सरकार को सुझाव देना।

5. जैन समुदाय के आराध्य 24 तीर्थकर पर रचे गये लोक साहित्य का प्रकाशन व प्रचार प्रसार करना।

6. जैन समुदाय के आराध्य भगवान महावीर के शांति एवं अहिंसा के सिद्धांतों का प्रचार प्रसार करना।

7. जैन समुदाय के आचार्य- संतों एवं साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं को भ्रमण के दौरान कानूनी संरक्षण प्रदान करने का सुझाव राज्य सरकार को देना।

उप निदेशक स्तर का विभागीय अधिकारी (समाज कल्याण सेवा संवर्ग सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग), बोर्ड के सचिव के पद का कार्य करेंगे। उक्त बोर्ड के कार्य संचालन के लिए अलग से नवीन पदों का सृजन एवं स्वीकृत किये जायेंगे।

ग. सेवा शर्ते - राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड की सेवा शर्ते इस बोर्ड के लिये निर्मित नियमों के अनुसार होगी।

छ. मार्गदर्शन की कार्य पद्धति- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, राजस्थान सरकार, राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड के लिये प्रशासनिक विभाग होगा।

ङ: कार्यक्षेत्र - राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान राज्य होगा तथा इस बोर्ड के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राज्य सरकार को कार्य योजना एवं सुझाव प्रस्तावित करेगा। छ. राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड के अध्यक्ष एवं सदस्यों की योग्यता, वेतन भत्ते, कार्यकाल तथा अन्य सुविधाओं के सम्बन्ध में राज्य सरकार जो भी निर्धारित करेगी, देय होंगे। लंबे समय से जैन समाज की यह मांग थी। मुख्यमंत्री अशोक जी गहलोत की इस महत्वपूर्ण घोषणा पर जैन समाज में हर्ष है तथा जैन समाज ने इसके लिए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का आभार जताया है।

टोंक में आर्यिका सूत्रमति माताजी के चातुर्मास की हुई स्थापना

जैन गजट संवाददाता

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन नसियांजी अमीरगंज टोंक में आर्यिका सूत्रमति माताजी ससंघ पांच आर्यिकाओं के प्रथम चातुर्मास की स्थापना हुई। समाज के मीडिया प्रभारी कमल सर्राफव पवन कंटान ने बताया कि श्रेष्ठी श्री मोहनलाल पुष्पा देवी छामुनियां परिवार (पूना) ने झंडारोहण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सायंकालीन बेला में विधिवत मंत्रोच्चारणों के साथ प्रथम कलश श्री महावीर प्रसाद, धर्मचन्द, जितेन्द्र कुमार, पासरोटिया, द्वितीय कलश श्री विमलचन्द, कमलकुमार, रमेश कुमार बरवास वाले, तृतीय कलश श्री टीकमचन्द, श्यामलाल, लालचन्द फुलेता वालों सहित समाज बन्धुओं ने 111 कलशों की स्थापना की। आर्यिका संघ को वस्त्र भेंट श्री कजोड़मल, कमलेश कुमार कलई वाले परिवार ने, शास्त्र भेंट श्री नेमीचन्द जितेन्द्र कुमार बनेठा ने वाले परिवार ने कर पुण्यार्जन प्राप्त किया।

गणाचार्य विरागसागर जी का चातुर्मास श्रेयांसगिरि में

परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज का चातुर्मास अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरि (जिला-पन्ना) म.प्र. में हो रहा है। देश भर में आपसे दीक्षित 80 संघ हैं जिनमें आपसे दीक्षित मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका जी का वर्षायोग देश में विभिन्न भागों में हो रहा है।

वैदिक गणित कार्यशाला का सानंद समापन

पियुष कासलीवाल, संवाददाता

औरंगाबाद। पि यू जैन माध्यमिक विद्यालय के आठवीं, नवीं, दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों को स्पर्धा परीक्षाओं में गणित विषय के महत्व को समझाने के लिए तीन दिवसीय स्मार्ट वैदिक गणित कार्यशाला का आयोजन किया गया। सोमवार को चौथे दिन कार्यशाला का समापन हुआ। कार्यशाला में स्वस्ति समूह की स्वाति कासलीवाल, मीना चांदीवाल, मौसमी सोनी के साथ भावना सोनी, संजीवनी ने मदद की। समापन समारोह की प्रस्तावना गणित शिक्षिका भारती देशमुख ने रखी। इस समय अध्यक्ष महावीर सेठी, उपाध्यक्ष सुनील सेठी, प्रमुख अतिथि के रूप में स्वस्ति समूह की अध्यक्ष शलाका पाटणी, सचिव सपना पापड़ीवाल, उपाध्यक्ष वर्षा कासलीवाल, प्रीति पाटणी, प्रीति बाकलीवाल, मोनिका ठेले, अनुजा दगडा, रश्मि पहाड़े, मुख्याध्यापक विजय पटोदी, जिला परिषद् शिक्षा विभाग के शिक्षा विस्तार अधिकारी वेंकटेश कोमटवार उपस्थित थे। संचालन दर्शना कासलीवाल ने किया। प्रियंका कासलीवाल ने आभार माना।

जगह जगह चातुर्मास कर रहे मुनि संघों के चरणों में शत् शत् वंदन

आनंद कुमार रत्नप्रभा सेठी

सिगनेचर स्टेट, 9 फ्लोर,
अपोजिट-डी.जी.पी. ऑफिस,
बी. के. काकोसी रोड, गुवाहाटी
(आसाम) 781007
मो. 9435012070

उन्नीसवीं पुण्य स्मृति दिवस पर

हार्दिक श्रद्धांजलि

परम पूज्य गुरुदेव अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज

भगवान आदिनाथ रंगिया दिगम्बर जैन मंदिर (आसाम)

स्व. श्रीमती कुसुम देवी जैन

(जन्म 1 जनवरी 1953, स्वर्गवास 5 अगस्त, 2004)
(धर्मपत्नी श्री कैलाशचंद जैन काला)

ऊपर जिसका अंत नहीं उसे आसमां कहते हैं, जहाँ में जिसका अंत नहीं उसे हम माँ कहते हैं

ये दुनिया है तेज धूप, पर वो तो बस छाँव होती है।
स्नेह से सजी, ममता से भरी, माँ तो बस माँ होती है।।
।। परमात्मा आपकी आत्मा को शांति प्रदान करें ।।

आपकी स्मृतियों को समेटे आपकी

पुण्यतिथि पर आपको श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं।

: श्रद्धावनत् :

श्री प्रकाशचंद-मधु, श्री बिनोद-दिव्या, श्री कमल-मीठू,
श्री पवन-शिखा (पुत्र-पुत्रवधु), सिद्धि, छवि, स्वजा, शब्दिता, न्यासा (पौत्री) ध्रुव, आर्यमन, नम्र (पौत्र)
एवं समस्त काला परिवार

श्री कैलाश चन्द प्रकाश चन्द काला

रंगिया, गुवाहाटी (आसाम), शक्ति नगर (दिल्ली), जिजोठ (राजस्थान)

सचमुच तो एक एक जीव भगवान ही है।

जैन गज़ट शिकायत 9415008344 जैन गज़ट

मौन जुलूस निकालकर मजिस्ट्रेट को ज्ञापन दिया

कुचामन सिटी। मारवाड़ की धर्म परायण नगरी कुचामन सिटी ने ऐतिहासिक भारत बन्द के दिन बृहस्पतिवार 20 जुलाई को पूरे जैन समाज ने मौन जुलूस निकालकर मजिस्ट्रेट को ज्ञापन प्रेषित किया। कर्नाटक में जैन मुनि युवाचार्य सन्त कामकुमार नन्दी जी महाराज की निर्मम हत्या के विरोध में जैन समाज के साथ-साथ जैनेतर समाज भी शामिल था। सभी ने काली पट्टी व हाथों में काले झण्डे ले रखे थे। जैनेतर समाज के प्रमुख नन्द किशोर अग्रवाल, ज्ञानाराम रनवा, हेमराज चावला, अनिल सिंह मेडतिया, जशजी गुजर, खेताराम सिसोदिया, जोगेन्द्र सिंह, घनश्याम गौड़, डा. रजनी गावड़िया, जगदीश गोयल, देवीलाल दादरवाल, राकेश चैधरी, मूलचन्द बगड़ा, राजू फौजी, दलपत सिंह, राम काबरा, रामोतार गोयल, फारूख सभी पत्रिकाओं के पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। यह कार्यक्रम श्री जैन वीर मण्डल के तत्वावधान में सकल दिगम्बर जैन समाज व सर्व समाज के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। सबसे महत्वपूर्ण भूमिका श्री जैन वीर मण्डल के अध्यक्ष सौभागमल गंगवाल, पवन जी गोधा (पूर्व बैंक अधिकारी) के साथ सुभाष जी रांवका, सुमेर जी बज, कैलाशचन्द पाण्ड्या, राजेश पाण्ड्या, सुरेश पाण्ड्या, अशोक गंगवाल व पार्षद श्रीमती बरखा रानी पाटनी आदि सभी जिनभक्तों ने जुलूस का संचालन करने में महत्वपूर्ण भूमिका

निभाने बड़ी संख्या में महिलायें थी। प्रत्येक महिला का मुझे झांसी की रानी के रूप में प्रतिबिम्ब दिख रहा था।

मजिस्ट्रेट मनोज चैधरी के सामने कई वक्ताओं ने अपने विचारों से सिंह गर्जना की, इस जुलूस की सबसे खास बात मैंने जो देखी कमल दादा पहाड़िया (कुचामन सिटी की पहचान) अस्वस्थ होते हुए भी इस चिलचिलाती धूप में पूरे जुलूस में अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए पैदल चल रहे थे। इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि यह जुलूस कितना मुनि भक्ति के प्रति समर्पित भावों से था। मैं कुचामन सिटी के जुलूस में साथ था। जब मजिस्ट्रेट के सामने समाज के पदाधिकारियों ने मुझे बोलने के लिए कहा तो मैंने भी अपनी भावनायें निम्न रूप से व्यक्त कीं- जैन आचार्य को करंट लगा तड़पाया, शरीर के 9 टुकड़े किये, नेता, मीडिया की चुप्पी, समाज शर्मसार जगह-जगह के जैन समाज के आन्दोलन ज्ञापन - भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र

जी मोदी भारत को विश्व गुरू बनाने का सपना देख रहे है और यह अच्छी बात भी है लेकिन जब भारत की पहचान को ही नष्ट कर दिया जायेगा तो भारत विश्व गुरू कैसे बनेगा और भारत की पहचान है निर्ग्रन्थ सन्त, जिनका त्याग व तपस्या के सामने भारत का प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति भी नतमस्तक है। संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज के दर्शन करने भोपाल में आप भी पधारे थे, पण्डित जवाहर लाल नेहरू से लेकर जितने भी प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति बने है करीब-करीब सभी प्रधानमंत्री, राष्ट्रपतियों ने निर्ग्रन्थ मुद्रा के दर्शन कर अपने सौभाग्य को सराहा है और उसी मुद्रा का आज यह हाल होगा तो भारत विश्वगुरू कैसे बनेगा। निर्ग्रन्थ सन्त इस धरती की पहचान है। मर्यादा, सेवाभक्ति में, राम, कृष्ण और हनुमंत मिले है, सच पूछो तो इस धरती को निर्ग्रन्थ संत मिले है। जिस धरती की पहचान मर्यादा के लिए रामचन्द्र से की जाती है। सेवा के लिए नारायण श्री कृष्ण को याद किया जाता है। भक्ति के लिए हनुमान जी को याद किया जाता है। आज इस धरती की पहचान निर्ग्रन्थ संतों से की जाती है। मोदी जी आपसे यही निवेदन है कि आप अपने पावर का उपयोग कीजिये, इन सन्तों की सुरक्षा सुनिश्चित कीजिये, दोषियों को सजा दिलवाने में अपनी भूमिका निभाईये। मोदी जी मैं आपको बताना चाहता हूँ यह मुनि पद तीनों लोकों में पूज्य है। जब किसी व्यक्ति का हजारों वर्ष का पुण्य का उदय आता है तो निर्ग्रन्थ मुद्रा के दर्शन होते है। निर्ग्रन्थ संत इस धरती की पहचान कैसे है-

अन्धों को शिवपथ दिखलाया,
पंगु को सम्मेद चढ़ाया।
गूंगे को वाणी देकर,
बहरे को सुनना सिखलाया।।

जो भटके हुए लोग है, उनको सन्मार्ग का रास्ता इन दिगम्बर सन्तों ने दिखलाया है। एक छोटी सी बच्ची जो पंगु थी, आचार्य पुलकसागर जी महाराज की प्रेरणा से उनके साथ पूरी सम्मेद शिखर जी की यात्रा कर गयी। यही तो इन सन्तों की त्याग व तपस्या का परिणाम है। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्ति सागर जी महाराज के सानिध्य में गूंगे को बोलना व बहरे को सुनना शुरू हो गया था इसलिए धरती की पहचान है। जिनकी तपस्या के सामने हवाओं का रूख बदल जाता है। प्रतिकूलता अनुकूलता में बदल जाती है। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का उदाहरण देख लीजिये- उनकी कठोर साधना व तपस्या के सामने आंखों की गयी हुई रोशनी वापस आ गयी इसलिए इस पृथ्वी की पहचान है दिगम्बर संत।

- शेखर चन्द पाटनी/ राष्ट्रीय संवाददाता
जैन गजट, मदनगंज-किशनगढ़,
मो. 9667168267

श्रमण संस्कृति बोर्ड: 22 मई को आचार्य वर्धमान सागर से मिले थे गहलोत

उदयपुर से निकली थी बोर्ड के गठन की राह आचार्य ने सीएम को बताई थी जरूरत

उदयपुर। राज्य सरकार ने श्रमण संस्कृति बोर्ड के गठन की घोषणा की है। इस बोर्ड के गठन की राह उदयपुर से ही निकली थी। दरअसल, गत 22 मई को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत उदयपुर दौरे पर आए थे। तब उन्होंने सेक्टर-11 में विराजे आचार्य वर्धमान सागर से भेंट की थी। तब आचार्य श्री ने राज्य में श्रमण संस्कृति बोर्ड के गठन की जरूरत बताई थी। मुख्यमंत्री ने आश्वस्त भी किया था। कर्नाटक में मुनि कामकुमार नंदी की हत्या से प्रदेश समेत पूरे देश के जैन समाज में आक्रोश फैल गया। शहर में गत 20 जुलाई को सकल जैन समाज ने मौन जुलूस निकालकर संतों की सुरक्षा की मांग की थी। समाज ने श्रमण संस्कृति बोर्ड की पैरवी की थी। अब सरकार की घोषणा से समाज पदाधिकारियों ने हर्ष जताया है। बोर्ड में जो भी पदाधिकारी बनेंगे वह जैन समाज से ही होंगे। मुख्य पांच पद है, बाकी सभी संबंधित विभागों के प्रतिनिधि भी शामिल रहेंगे।

नियुक्तियां जल्द: सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग के शासन सचिव डॉ. समित शर्मा का कहना है कि सरकार की मंशा के अनुसार राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड का गठन कर लिया है और नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। नियुक्तियां बाकी है जो सरकार के आदेशानुसार की जाएंगी।

राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड के गठन से जैन समाज में दौड़ी खुशी की लहर

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर। राजस्थान सरकार द्वारा प्रदेश में अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय की संस्कृति, धार्मिक सम्पत्तियों की सुरक्षा, संरक्षण, जैन आचार्यों, संतों की सुरक्षा एवं चर्या के संरक्षण के लिए राजस्थान सरकार के मुखिया अशोक जी गहलोत ने राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड का गठन कर अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय को अनूठी सौगात दी है जिससे समुदाय के श्रमण ही नहीं अपितु समुदाय का युवा वर्ग एवं समाज श्रेष्ठियों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी है। सम्पूर्ण जैन समुदाय ने माननीय मुख्यमंत्री का आभार प्रकट किया है। राजस्थान समग्र जैन युवा परिषद् इसके संदर्भ में माननीय मुख्यमंत्री महोदय से विगत 2 वर्षो से अधिक समय से यह मांग कर रही थी। समग्र राजस्थान जैन युवा परिषद के अध्यक्ष जिनेंद्र जैन ने बताया कि जैन समुदाय ने जैन गजट के कार्य की भूमिका की भूरी-भूरी सराहना करते हुए कहा कि जैन गजट द्वारा प्रदेश भर के जैन संगठनों के द्वारा चलाई गई सोशल नेटवर्क पर चलाई गई मुहिम को अपने समाचार पत्र के माध्यम से महत्वपूर्ण कवरेज प्रदान कर राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड के गठन के लाभों की जानकारी प्रदान कर जैन समुदाय को जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर अल्पसंख्यक वर्ग के हितार्थ तीव्र गति से कार्य किया, इसके लिए भारत का सम्पूर्ण जैन समुदाय जैन गजट के द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना करते हुए जैन गजट को धन्यवाद ज्ञापित करता है।

जैन राजनैतिक चेतना मंच का राष्ट्रीय अधिवेशन आगरा में 15 अक्टूबर को

जैन गजट संवाददाता

आगरा। मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज के पावन सानिध्य में एम. डी. जैन कॉलेज हरीपर्वत आगरा में जैन राजनैतिक चेतना मंच के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री हुकम काका जैन की अगुवाई में 22 जुलाई 2023 को जैन राजनैतिक चेतना मंच के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की ऐतिहासिक मीटिंग हुई। कार्यक्रम में मंच का राष्ट्रीय अधिवेशन आगमी 15 अक्तूबर 2023 को एम. डी. जैन कॉलेज हरिपर्वत आगरा में गुरुदेव पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज के सानिध्य में करने का निश्चय किया गया। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री हुकम जैन काका जी ने सभी को संबोधित करते हुए अधिवेशन की घोषणा की। उन्होंने कहा कि आगरा में पूरे देश के जैन समाज के राजनीतिज्ञों का विशाल अधिवेशन 15 अक्तूबर को होगा, जिसमें सभी राष्ट्रीय पदाधिकारी, प्रदेश के सभी पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या चेन्नई, श्री ललित जैन झांसी राष्ट्रीय महामंत्री, श्री सुकीर्ति जैन, संगठन महामंत्री श्री निर्मल जैन कासलीवाल इंदोर, श्री पवन जैन गोधा राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष महासभा, श्री विवेक जैन बैनाड़ा राष्ट्रीय अध्यक्ष युवा महासभा, श्री सुमित जैन राष्ट्रीय सचिव दिल्ली, श्री अमित जैन अध्यक्ष युवा महासभा आगरा, संदीप जैन गुरुग्राम राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री महासभा आदि सभी ने ध्वनि मति से अपनी सहमति जताई। सभी ने अधिवेशन को सफल बनाने के लिए अपने-अपने सुझाव दिए।

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2021-2023

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 7880978415,
9415108233, 7505102419 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।